A Monthly Book of Self Progress Churning Points

From Baba's Everyday Murlis

September 2014

In Remembrance of our most beloved Baba

-Atma Bhai

a.brahmin.soul@gmail.com

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:01-09-14

विश्व कि सर्व आत्माओं को इस कलयुगी दुनिया से मुक्त कर मुक्तिधाम ले जाने वाले, परमपिता-परमात्मा, मीठे-मीठे शिवबाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - तुमने सारे कल्प में आलराउन्ड पार्ट बजाया, अब पार्ट पूरा हुआ घर चलना है.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को बार-बार अपने ऑरिजिनल घर, शांतिधाम अथवा मुक्तिधाम को याद दिलाया जिसे कि हम आत्माओं को पुरानी दुनिया से वैराग्य हो और नई दुनिया में जाने के लिए पुरुषार्थ करें.

बाबा ने जितनी बार हमें स्वीट होम की याद दिलाई उसे ही फिरसे रिपिट करेंगे इस फिलिंग के साथ कि बाबा मुझे अपने घर ले जा रहे है तो बाबा कि, घर कि और वर्से कि याद हमें पक्की होती जायेंगी.

- रुहानी बच्चों से रुहानी बाप पूछ रहे हैं - मीठे-मीठे बच्चों, तुम्हें अपना घर शांतिधाम याद है? भूल तो नहीं गये हो? अब तुम्हारा ८४ का चक्र पुरा हुआ, कैसे पुरा हुआ है यह भी तुम समझ गये हो. सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक ऐसे और कोई तुम्हें यह पुछ न सके.

- मीठे-मीठे लाडले बच्चों से बाबा पूछते हैं, अब घर चलना है ना? घर चलकर फिर सुखधाम में आना है. यह हे पुरानी दुनिया, दुखधाम. अब इस दुख से मुक्त हो, जाना है मुक्तिधाम. मुक्तिधाम अथवा शांतिधाम जैसे कि सामने खड़े हैं. वह है धर. फिर तुम नये विश्व में आयेंगे, जहॉ पवित्रता, सुख और शांति भी होगी.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चे ही शांतिधाम, सुखधाम को जानते हो और कोई नहीं जानते. तुम पहले सुखधाम में थे फिर दुखधाम में आये हो. सेकण्ड, मिनट, घण्टे, दिन, वर्ष बीत गये. अब ५ हजार वर्ष में बाकी कुछ ही दिन रहते हैं. फिर बाप तुम बच्चों को साथ ले जायेंगे. कहॉ? अपने धर. बाप बच्चों को स्मृति दिलाते रहते हैं.

- अब बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चे, अब तो तुम्हें अपने घर जाना है. यह है जीव-आत्माओं की दुनिया. वह है आत्माओं की दुनिया.

- बाप कहते है, यह घड़ी-घड़ी स्मृति में लाना चाहिए - हम दूर देश के रहने वाले हैं. हम आत्माओं का घर है ब्रह्मांड.

- बाप कहते है, यह भी तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए कि हम वहॉ रहते हैं, इस आकाश तत्व से पार जहॉ सूर्य-चांद भी नहीं होते. तुम वहॉ के रहने वाले यहॉ आये हो पार्ट बजाने. ८४ जन्मो का पार्ट बजाते हो. तुम ही आलराउन्डर, आदि से अन्त तक पार्ट बजाते हो. अब तुम्हारा पार्ट पूरा हुआ, वापस घर चलना हैं.

- रुहानी बाप कहते है, रुहानी पण्डे तो तुम हो ना. सबको रुहानी घर का रास्ता बताने वाले. वह है तुम आत्माओं का रुहानी घर. रुह वहॉ से नीचे आकर जन्म लेकर पार्ट बजाती है. यह बाते तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते.

- बाबा कहते है, वहॉ तुम सब मेरे साथ परमधाम में रहते हो. वह है तुम्हारा आत्माओं का घर. आत्माये तो सब एक जैसी है. बाकी शरीर एक न मिले दूसरे से.

- बाबा कहते है, दिन-प्रतिदिन तुम याद कि यात्रा में पक्के होते जायेंगे. फिर अन्त में तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा. सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी. फिर यह नौकरी आदि याद नहीं आयेगी. मरेंगे ऐसे जैसे बैठे-बैठे हार्टफेल होते है. दुख की बात नहीं. बाप को जान लिया है तो स्वर्ग के मालिक बन ही जायेंगे. बाप कहते है तुम्हारा तो यह हक है बाप से वर्सा लेने का.

शुक्रिया बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ -------- Date:02-09-14

सत्य स्वरूप, ज्ञान सागर, परमात्मा, अपने ज्ञान से, हमारे जैसे साधारण मनुष्य को देवता बनाने वाले बाप के कहा, मीठे बच्चे - ब्राह्मण हैं चोटी और शूद्र हैं पाव, जब शूद्र से ब्राह्मण बने तब देवता बन सकेंगे.

जब से बेहद के बाप ने इस बेहद के ज्ञान रुद्र यज्ञ कि स्थापना कि है तब से अज्ञानी मनुष्यों इस का विरोध मुख्य दो बातों के लिए ही करते हैं - एक है पवित्रता और दूसरा है विनाश. अब धीरे - धीरे पवित्रता को तो लोग मान ने लगे हैं कि यह अच्छी बात है लेकिन सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सही ज्ञान न होने के कारण, आज भी कई लोग कहते है कि ब्रहमाकुमारीयॉ तो विनाश कि बाते ही करती रहती है.

लेकिन हम बाबा के बच्चे जानते हैं कि विनाश तो, न भगवान करवाता हैं, न कोई मनुष्य करवाता हैं, बल्कि विनाश तो अपने समय पर अपने आप ही होना ही हैं, क्योंकि यह सृष्टि का चक्र तो अनादि काल से फिरता ही रहता है. ज्ञान सागर बाप तो अपने समय पर आकर हमें ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाते है क्योंकि वही एक है जिसे इस बेहद कि सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान है. इस लिए वही सच्चा गीता-ज्ञान दांता इस समय हम भाग्यशाली बच्चों को ऐडप्ट करता है और शूद्र से ब्राह्मण बनाता है. फिर ज्ञान और योग सिखलाकर हमारी आत्मा को संपूर्ण निर्विकारी और सर्वगुण संपन्न बनाते है जिसे कि हमारी आत्मा आनेवाले सतयुग के लिए लायक बने.

हम ब्राह्मणों को सतयुग के देवी-देवताओं से भी श्रेष्ठ माना गया है इसके मुख्य कारण क्या है?

1. हम ब्राह्मणों को ही परमात्मा का साथ है, सतयुग में देवी-देवताओं को परमात्मा के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता.

2. हम भाग्यशाली ब्राह्मणों की स्वयं परमात्मा, इस समय बाप बनकर पालना करते है, टीचर बनकर पढ़ाते है और फिर सतगुरु बनकर हमें सच्ची सद्गति देते है. सतयुगी देवताओं के तो उनके लौकिक के पिता और टीचर अलग-अलग होंगे, वहाँ सतयुग में गुरु होता नहीं.

3. ब्राह्मणों को इस समय आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है, जब कि देवताओं को स्वयं आत्मा है उतना ही ज्ञान होता है.

4. अभी हम ब्राह्मण पुरुषार्थ कर, माया-रावण से युद्ध कर, अपनी आत्मा को बाबा के साथ योग से संपूर्ण पावन बनाते है और बाबा का दिया हुआ ज्ञान धारण कर सर्वगुण संपन्न बनते है. इसलिए अब हम ब्राह्मणों कि है चढ़ती कला. जबकि सतयुग के देवी-देवताये तो अभी के पुरुषार्थ का प्रालब्ध भोगते है. वह कोई पुरुषार्थ नहीं करते. इसलिए धीरे-धीरे उनकी आत्मा भी जन्म-बाय-जन्म गिरती ही आती है.

ऐसा हमारा ब्राह्मण जीवन, हमारे पूरे कल्प के बाकी ८३ जन्मो में से सबसे श्रेष्ठ है. तो यही नशा रहे कि हम ब्राह्मण है चोटी, बाद में है देवता, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. इस नशे में रहकर सदा हमारा पुरुषार्थ तीव्र रखेंगे तो हम सफलता कि सर्वोच्च शिखर पर जल्दी ही पहुँच जायेंगे. ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ -------- Date:03-09-14

जिसे पाने के लिए हम लास्ट ६३ जन्मो से तडपते थे, वही ज्ञान-सागर, परमात्मा ने आज हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - तुम जितना समय एक बाप की याद में रहेंगे उतना समय कमाई ही कमाई है, याद से ही तुम बाबा के समीप आते जायेंगे.

हम सब ब्राह्मण आत्माये यह जरूर चाहती है कि हम अपने प्यारे-प्यारे शिवबाबा के पास रहे. एक होता है स्थूल में मधुबन में रहना और समझना कि हम शिवबाबा के पास है और दूसरा होता है सूक्ष्म में अपनी दिव्य-बुद्धि से बाबा कि याद में समाये रहना. अब यह तो हम सब जान सकते है कि कोनसी बात जरूरी है, सूक्ष्म में दिव्य-बुद्धि से बाबा कि याद में रहना या स्थूल में मधुबन में रहना और समझना कि हम तो बाबा के साथ ही है!

बाबा हमें यही समझाते है कि तुम कभी मुझे इस आँखों से देख नहीं सकते हो लेकिन तुम्हें पुरुषार्थ करना है मुझे जानने का. जो बच्चे मुझे एक्युरेंट जानते है वही बाबा कि याद में सदा रह सकते है और वही सच में अभी ब्राह्मण जीवन में बाबा का संग का अनुभव करते है और परमधाम में भी बाबा के पास उनका स्थान होगा.

बाबा ने आज सारी मुरली में दो मुख्य बातों पर हमारा ध्यान खिचवाया. १. बाबा कि याद का सच्चा-सच्चा चार्ट रखना और २. शिवबाबा के यज्ञ में जो भी कुछ समर्पित करते है उसे बाबा को अर्पण कर रहे है ऐसी भावना से करो तो ही सफल होगा.

बाबा हमें दो बातों का चार्ट रखने को कहते है, एक हे याद का और दूसरा हे कर्मों का. याद से हमारी आत्मा सतोप्रधान-पावन होती जाती है और दूसरा फिर के कर्मों का जिसे हमारी आत्मा में देवी-गुण आते जाते है. लेकिन यह बात बहुत जरूरी है कि हम जो भी चार्ट रखे वह बड़ा सच्चाई-सफाई वाला हो, जैसे कि बाबा ने आज मुरली में एक्जाम्पल दिया कि बाबा आने से पहले हम बच्चे बाबा कि याद में मधुबन में बैठते है तो चेक करो कि सच में हम याद में बैठे हैं या और फिर कई फालतू-व्यर्थ बातों में ही टाइम गँवा देते है. अब वह टाइम अगर हम याद में गिनते है तो फिर उसका कोई फायदा नहीं होता.

बाबा की याद का सच्चाई-सफाई वाला चार्ट हो इस के लिए उसे हर वक्त अपने साथ रखना चाहिए और हर १-३ घंटे उपडेंट करना चाहिए. एक एक्जाम्पल नीचे दिया है.

	तीव्र पुरुषार्थी ब्राह्मण चार्ट		
	बाबा की याद	अच्छे कर्म	साधारण-बुरे कर्म
3 – TO – 6 AM			
6 – TO – 9 AM			
9 – TO – 12 PM			
12 – TO – 3 PM			
3 – TO – 6 PM			
6 – TO – 9 PM			
9PM – TO – 3AM सोते समय			

हर तीन घंटे के बाद, ५ मिनिट निकाल कर इस चार्ट को उपड़ेट करें.

सोते समय रात को अच्छे या बुरे स्वप्न आते है उसे भी लिखे.

आज बाबा ने जो दूसरी बात बताई कि बाबा के यज्ञ के लिए कुछ भी करते है सेवा करते है या फिर धन जमा कर के देते है तो उसे शिवबाबा को अर्पण कर दो. यहाँ कहने का मतलब है कि सच्चे दिल से भावना यह रखो कि शिवबाबा ने मुझे यह सेवा दी है या शिवबाबा के यज्ञ को ही धन दे रहे है तो बाबा कि याद में किया हुआ हर सेवा का कर्म या दिया हुआ धन सफल हो जाता हैं.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:04-09-14

प्यार के सागर बाप ने अपने आज्ञाकारी, वफादार और फरमान-वरदार बच्चों प्रति कहा, मीठे बच्चे - सदा श्रीमत् पर चलना ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ हैं. श्रीमत् पर चलने से ही आत्मा का दीपक जग जाता हैं.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को सदा श्रीमत् पर चलते रहने कि शिक्षा दी हैं और कहा श्रीमत् पर चलने से ही आत्मा सतोप्रधान-पावन बन जायेंगी और सतयुग में ऊँचा पद प्राप्त करेगी.

क्या हैं ईश्वरीय मत या कहे श्रीमत्?

1. बाबा हमें सबसे पहली मत देते हे, बच्चे खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो, तो तुम्हारे 63 जन्मो के विकर्म, जो विकारों के रूप में आत्मा में हैं वह भस्म हो जायेंगे ओर आत्मा संपूर्ण पावन बन जायेंगी.

2. जितना हो सके उतना देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करो. स्वयं को आत्मा समझो और सम्बन्ध-समपर्क में आने वाले को भी आत्मा भाई ही देखो.

3. संपूर्ण पवित्र ब्राह्मण जीवन. इसलिए बाबा हमें युक्ति बताते है एक-दूसरे के प्रति आत्मा भाई-भाई की वृति रख, दृष्टि से एक-दूसरे को बृकुटि में आत्मा भाई को ही देखो.

4. मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते है, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अंतर्मुखी बन जायेगी. अंतर्मुखी स्थिति बहुत मजबूत स्थिति हे, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं. व्यर्थ संकल्पों पर क़ाबू पा सकेंगे.

5. साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर से संपूर्ण वैराग्यता. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओं से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर से संपूर्ण वैराग्य दिलाते है ओर सच्चाई, सादगी ओर स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

6. कर्मयोगी जीवन. ब्राह्मण जीवन में माया से बचने के लिए, बाबा हमें याद की यात्रा में रहने का सिखलाते हैं. हर कर्म करते बुद्धि का योग एक बाप से रहे इसे ही कर्मयोगी जीवन कहा जाता हैं.

7. दैवी गुणों को धारण करना हैं. बाबा ने कहा है, किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना हैं.

8. ईश्वरीय नियमबद्ध जीवन. सुबह अमृत वेला, मुरली क्लास, खाने-पीने की धारणा, कम बोलो - मीठा बोलो - धीरे बोलो. साम का योग ओर चार्ट.

9. खुद को निमित्त समझ कर, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करना ओर ट्रस्टी हो कर संसार का कारोबार चलाना.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:05-09-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को अपना सही परिचय देकर हमें परमात्मा ज्ञानी बनाने वाले, मीठे-मीठे बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं. उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है.

आज बाबा ने सारी मुरली में आत्माओं और एक परमात्मा के बीच का अंतर स्पष्ट किया है. जो आत्माये यह अन्तर को पहचान सकती है वही सत्य स्वरूप बाप को कुछ हद तक समझने या कहे जानने में सफल हो सकती हैं.

- बाबा ने कहा, शिव भगवानुवाच. वह हुआ रुहानी बाप क्योंकि शिव तो सुप्रीम रुह है ना, आत्मा है ना. ऐसा कोई जीवात्मा अपने लिए कह न सके कि मैं सुप्रीम आत्मा हूँ.

- बाबा ने कहा, जो बड़े-बड़े विद्वान सन्यासी, गुरु आदि जो बहुत अच्छी गीता-भागवत-रामायण सुनाते है वह कभी भी शिव को बाबा कहेंगे नहीं यॉ फिर गीता का भगवान कृष्ण को समझ उनके साथ योग लगाते नहीं. वह तो है ही तत्व ज्ञानी. वह ब्रह्म को ही याद करते हैं क्योंकि उन्हें सत्य स्वरूप भगवान का सही परिचय मिलता ही नहीं. भगवान का सही परिचय तो स्वर्ग में आने वाले, भाग्यशाली गृहस्थ मार्ग वालो को ही मिलता है, वही स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा को "बाबा" कह कर याद करते हैं.

- हिन्दू धर्म में जितने भी देवी-देवताये है उनमें से किसी को भी "बाबा" शब्द युज कर बुलाते नहीं हैं. शिव को ही सब बाबा कहते हैं क्योंकि वह सब आत्माओं का बाप है. सब आत्माये उनको पुकारती हैं - परमपिता परमात्मा. वह है सुप्रीम, परम है क्योंकि परमधाम में रहने वाला है. हम सब आत्माये भी परमधाम में रहते है परन्तु उनको ही परम आत्मा कहते है.

- बाबा ने कहा, परमात्मा कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हैं क्योंकि वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते. उनका जन्म ही दिव्य और अलौकिक है. ऐसे कोई भी जीवात्मा (शरीर धारी आत्मा) अपने लिए ऐसा नहीं कह सकती कि मैं अन्य शरीरधारी को रथ बनाकर, उसमें

प्रवेश कर तुम बच्चों को पतित से पावन बनने का ज्ञान देकर विश्व का मालिक बनने का रास्ता बताता हूँ.

- बाबा कहते है, ऐसा एक परमात्मा बाप ही कह सकता है कि मैं ही आकर नई दुनिया स्थापन करता हूँ. तुम बच्चों को आत्मा, परमात्मा और इस सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान मैं अभी ही देता हूँ. कल्प के अन्त में जब सब आत्माये परमधाम चली जाती है तो यह ज्ञान गुम हो जाता है. इसलिए एक परमात्मा के सिवाय अन्य कोई जीवात्मा तो यह ज्ञान कभी दे नहीं सकती.

- बाबा कहते है, कोई भी जीवात्मा कभी ऐसा कह नहीं सकती की तुम स्वयं को आत्मा समझ मेरे साथ योग लगावों तो पतित से पावन बन जायेंगे. एक परमात्मा ही हम बच्चों को कहते है कि तुम खुद को आत्मा समझ मुझे याद करो तो पवित्र-पावन बन जायेंगे.

- बाबा कहते है, कोई भी जीवात्मा इस सृष्टि रुपी ड्रामा चक्र में बाप, टीचर और गुरु ऐसे तिन रोल एक जन्म में नहीं निभा सकती. एक परमात्मा ही है जो अभी हम बच्चों कि पिता के रुप में पालना करता, टीचर के रूप में ज्ञान देता और सतगुरु के रूप में वरदानों से शृंगार कर सच्ची सतगति प्रदान करता हैं.

- तब बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी जान नहीं सकते, जब मैं, स्वयं आकर अपना परिचय दूँ तब ही मुझे जान सकते हैं. सब आत्माये तो बाप को नहीं पहचानेगी, कोटों में कोई है जो बाबा को सही रिती से जानते हैं.

यह ऐसी पॉइन्टस है जो हम किसी भी आत्माको सुनाकर, समझाकर, बाप में पुरा निश्चय बैठा सकते है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:06-09-14

पारसनाथ, बबूलनाथ, पतित-पावन बाप ने आज फिरसे हम बच्चों को याद कि यात्रा पर जोर देते हुए कहा, मीठे-मीठे बच्चों, याद की मेहनत तुम सबको करनी है, तुम अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूँगा.

हम सब यह तो जानते हैं बाप को याद करना मुश्किल नहीं हैं पर खुद को आत्मा समझना मुश्किल है क्योंकि हमें लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी रहने की आदत पड़ी हुई है. इस लिए मेहनत स्वयं को आत्मा समझने या देही-अभिमानी स्थिति बनाने में ही हैं. अगर हमारी स्थिति आत्मा-अभिमानी है तो बाप कि याद भी सहज ठहर सकेंगी.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं.

एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को युज कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फिल करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये.

ध्यान में रहे कि इस स्वमानो को युज करने से पहले, हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब इस अवस्था में रहकर हम मुरली के कुछ महावाक्यों को हम स्वयं भगवान से सुन रहे है इस अवस्था में उसे पढ़ेंगे.

- बाप भी करते है ओम शांति, यह भी कहते है ओम शांति. बच्चे भी कहते है ओम शांति अर्थात हम आत्माये शांति धाम की निवासी है.

- बाबा फिर ५ हजार वर्स बाद आकर ऐसे ही कहेंगे, मीठे-मीठे रुहानी बच्चों. एक रुहानी बाप ही रुहानी बच्चों को कहते है - एक बार पार्ट बजाया फिर ५ हजार वर्स के बाद पार्ट बजायेंगे क्योंकि फिर तुम सीढ़ी उतरते हो ना.

- बाप बच्चों को समझाते रहते है - शिवबाबा को याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनो. स्वर्ग शिवबाबा ने स्थापन किया ना. तो शिवबाबा को और सुखधाम को याद करो.

- बाबा कहते है - है मीठे-मीठे बच्चों, अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो. बाप प्रतिज्ञा करते है - तुम याद करोगे तो पापों से मुक्त कर दूंगा. बाप ही पतित-पावन, सर्वशक्तिमान, वर्ल्ड आल्माइटी आथोरिटी हैं.

- अब बाप कहते है - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. देखो, तुम आत्माओं को ही बाप पढ़ाते है. आत्माओं को ही राज्य मिलता है. आत्माओं ने ही राज्य गँवाया हैं.

- बाप कहते है अब आपस में तुम्हें भाई-बहन भी नहीं, भाई-भाई समझना है. नाम-रुप से भी निकल जाना हैं. बाप भाईओं (आत्माओं) को ही पढ़ाते है.

ॐ शांति.

आज कि अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:07-09-14

हम सब के प्यारे ब्रह्मा बाबा जिस धारणा के आधार पर संपूर्ण बने, ऐसे हम सब बच्चों को भी अपना संपूर्ण बनने का लक्ष्य को ध्यान दिलाते हुए, बापदादा ने कहा, अगर संपूर्ण बनना है तो इसके लिए विशेष धारणा है - सदा ब्रह्माचारी अर्थात ब्रह्मचारी और सदा पर-उपकारी.

बापदादा ने आज हम बच्चों को, हमारे प्यारे ब्रह्मा बाबा ने अपने साकार जीवन में, परोपकारी बनने की जो प्रेक्टिकल रुप में जो धारणा कि उसे बहुत स्पष्ट समझाया है, जिसे हम अपने भी धारण कर बाप समान संपूर्ण बन सकते है.

बापदादा ने कहा, परोपकारी बनने कि परिभाषा सहज भी है और अति गुह्य भी है.

1. पर-उपकारी अर्थात हर समय बाप समान हर आत्मा के गुणमूर्त को देखते, गुण-ग्राही बनो.

2. पर-उपकारी किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देंगे.

3. परोपकारी अर्थात सदा बाप समान स्वयं के खजानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप होंगे.

4. परोपकारी सदा स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न बेगमपुर के बादशाह अनुभव करेंगे. बेगमपुर अर्थात जहॉ कोई गम नहीं. संकल्प में भी गम के संस्कार अनुभव न हो.

5. परोपकारी अर्थात सदैव विशेष रुप से अपनी मन्सा अर्थात संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखूट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करने वाला. कोई भी आत्मा सम्पर्क में आवे तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होकर जाए. ऐसे अखण्ड दानी होंगे. विशेष समय वा सम्पर्क वाले अर्थात कोई-कोई आत्माओं के प्रति दानी नहीं लेकिन सर्व आत्माओं के प्रति महादानी होंगे.

6. परोपकारी आत्मा स्वयं मालामाल होने के कारण किसी भी आत्मा से कुछ लेकर के देने के इच्छुक नहीं होंगे. याद रहे किसी से कुछ लेकर के कुछ देनेवाले को परोपकारी नहीं सौदागर कहा जाता है.

7. परोपकारी अर्थात भिखारी को मालामाल बनाने वाले - अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले, गाली देने वाले को गले लगाने वाले. परोपकारी आत्मा अपने पर-उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे अर्थात भिखारी को बादशाह बना दे.

8. परोपकारी त्रिकालदर्शी होने के कारण ही आत्मा के संपूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, हर आत्मा की कमजोरी को परखते हुए उस कमजोरी को स्वयं में धारण नहीं करेंगे, वर्णन नहीं करेंगे. लेकिन अन्य आत्माओं की कमजोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देंगे. खुद कांटे बनने के बजाय - कांटे को भी फूल बना देंगे. ऐसे परोपकारी सदा सन्तुष्टमणी के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होंगे और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाले होंगे.

9. परोपकारी आत्माओं की कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा करें. जिसके प्रति सब निराशा दिखायें ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा दें. अपने सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर स्वयं निर्माण बनना यही परोपकार है. यह देना ही सदा के लिए लेना है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:08-09-14

हमें सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर प्रकृतिजीत बनाने वाले, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - जब तुम नम्बरवार सतोप्रधान बनेंगे तब यह नैचुरल कैलेमिटीज वा विनाश का फोर्स बढ़ेगा और यह पुरानी दुनिया समाप्त होगी.

आज भी बहुत सारे ब्राह्मण कहते है - बाबा तो बहुत सालो से कह रहे हैं की यह पुरानी दुनिया विनाश होनी है, लेकिन कुछ भी होता नहीं. आज बाबा ने मुरली में उसका राज बताते हुए कहा, इस पुरानी दुनिया का विनाश भी तब होगा जब हम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बन जायेंगे यानी इस पुरानी दुनिया का विनाश, हम ब्राह्मण आत्माओं के सतोप्रधान बनने पर निर्भर है. कैसे?

इस सारा सृष्टि चक्र, पुरुष (आत्मा) और प्रकृति का एक खेल है. इस खेल में प्रकृति हमेशा पुरुष (आत्मा) को फोलो करती है, यह एक क़ुदरती नियम हैं. अगर हम सृष्टि चक्र को देखे तो इस में आधा कल्प, यानी सतयुग और त्रेतायुग, हम आत्माये सतोप्रधान से सतो में रहकर पार्ट बजाते है तो उस समय प्रकृति भी मनुष्य आत्माओं को सुख देती है. जब द्वापर से देवी-देवताओं की आत्माये वाम मार्ग में जाती है यानी विकारी बनती जाति है तब से प्रकृति भी धीरे-धीरे रजो से तमोगुणी बनती जाती है और छोटी-बड़ी हल-चल शुरू कर प्राकृतिक आपदाये करती हैं, जो मनुष्यों को दुख पहुँचाती है. अब कलियुग के अन्त में हम देख रहे है की आत्माये जब संपूर्ण तमोप्रधान बन जाती है तो प्राकृतिक आपदाये और ही बढ़ गई है.

हमारा यह शरीर भी प्रकृति के पांच तत्वों का बना हुआ है. हम आत्माये रथी हैं इस शरीर को चलाने की. जैसे हमारी आत्मा अभी पुरुषार्थ कर रही है सतोप्रधान-संपूर्ण पवित्र बनने की, उतना हमारा तमोप्रधान शरीर हम से अलग होता जाता है. हम धीरे-धीरे फील करते है कि हम आत्माये अलग है, और यह शरीर अलग है. अभी शरीर को छोटी-बड़ी बीमारी होती हैं तो उसकी असर आत्मा को नहीं होती यानी आत्मा शरीर के सुख से सुखी और शरीर के दुख से दुखी नहीं होती. शरीर को कुछ भी हो जाये पर आत्मा सदा शांत और सुखी रहती हैं. यही प्रकृतिजीत आत्मा की निशानी हैं.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:09-09-14

ज्ञान सागर बाप ने अपने सारे ज्ञान का सार समझाते हुए कहा, मीठे बच्चे - बाबा तुम्हें सारे सृष्टि चक्र के झाड़ की, भक्ति मार्ग के राज की सब बातें डिटेल में समझाते हैं, लेकिन फिर कहते है होलसेल माना मनमनाभव.

बाबा एक बात हर मुरली में हम बच्चों से कहते है - मीठे बच्चे, स्वयं को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो यानी मनमनाभव. लेकिन यह बात जितनी लिखने-बोलने में सहज लगती है, उतनी सहज है नहीं. इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी स्थिति देही-अभिमानी बनानी पड़े और हमारी आत्मा को लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी रहकर पाठ बजाने की आदत पड़ गई है.

हम आत्माये वापस देही-अभिमानी बने, इसलिए बाबा ने आज हमें दो बातों की प्रैक्टिस करवाई.

१. आत्मा का स्वदर्शन चक्र घुमाना. बाबा ने इसके लिए हमें सारे सृष्टि चक्र की नॉलेज देकर हमें कहा, परचिंतन को छोड़, खुद कि घोंट तो नशा चड़े.

प्रैक्टिस ---> में ब्रह्मा-मुखवंशावली, पदमा-पदम भाग्यशाली ब्राह्मण आत्मा हूँ. इस समय स्वयं भगवान इस सृष्टि पर आकर मुझ आत्मा के पिता के रुप में मेरी पालना (देख-रेख) करते हैं, टीचर बनकर मुझे पढ़ा रहे हैं, और सतगुरु बनकर मेरी आत्मा को वरदानों से शृंगार कर रहे हैं. मैं आत्मा मेरे परम प्यारे पिता को याद कर वापस सतोप्रधान बन रही हूँ. जब में आत्मा संपूर्ण सतोप्रधान बन जाऊंगी तो मेरे प्यारे पिता, सतगुरु बनकर अपने साथ परमधाम ले जायेंगे. वहॉ से मैं आत्मा वापस सृष्टि चक्र के आदि में श्रीकृष्ण के साथ पार्ट बजाने इस सृष्टि पर वापस आऊंगी. मेरा प्रथम जन्म श्रीकृष्ण के सखा के रूप में सतयुग में होगा. मैं और श्रीकृष्ण बहुत अच्छे दोस्त होंगे. हम साथ में खेलेंगे, साथ में स्कूल जायेंगे और साथ में रहकर ही बड़े होंगे. सतयुग-त्रेता, २१ जन्म मैं आत्मा, सतोप्रधान से सतो में रहकर, ऊँच कोटि के पार्ट बजाकर, अपरम-अपार सुख भोगती हूँ. अब मैं आत्मा द्वापर में प्रवेश करती हूँ. अब मैं आत्मा सतो से रजो बनती हूँ. फिर भी मैं सुखी रहकर ही पाठ बजाती हूँ. अब मैं आत्मा कलियुग में प्रवेश करती हूँ तो मैं रजो से तमो और अन्त में तमोप्रधान बन जाती हूँ. कलियुग में भी मैं आत्मा अधिकतर सुखी रहकर पार्ट बजाती हूँ. लेकिन अन्त में जब प्रकृति भी संपूर्ण तमोप्रधान बन जाती है तो मुझ आत्मा को वायुमण्डल के कारण कुछ

मानसिक दुखो का सामना करना होता है, जो मैं पूरे हिम्मत-हौसले से करती हूँ. फिर बाबा आकर मेरा हाथ अपने हाथों में लेते है और कहते है बच्चे अब तुम थक गये है और मेरी पनाह मैं आ जाओ. स्वयं परमात्मा, मुझ आत्मा को ब्रह्मा द्वारा ऐड़प्ट करते हैं और मुझे वापस संपूर्ण सतोप्रधान बनने का रास्ता दिखाते हैं. अभी स्वयं भाग्यविधाता, बाप बनकर सारे कल्प के लिए मेरा भाग्य लिख रहे है. वाह मेरा बाबा वाह और वाह मेरा भाग्य वाह.

२. स्वयं को आत्मा समझने या देही-अवस्था बनाने की प्रैक्टिस करना.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं. एकाग्रता कि शक्ति को युज कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को युज कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये.

बाबा ने कहा है की साईन्स तुम्हें बहुत मदद करेंगी. हमें साईन्स के साधनों को अपने पुरुषार्थ बढ़ाने के लिए युज करना हैं. नीचे दिये हुए स्वमानो को अपने आवाज में रिकार्ड कर ऐम-पी-३ फाइल बनाकर उसे बार-बार सुने, तो हमारे सब-कोन्सियस में हम आत्मा है यह बात सदा के लिए ठहर जायेंगी और अपनी अवस्था देही-अभिमानी बनाने में मदद मिलेगी.

ध्यान में रहे कि इस स्वमानो को युज करने से पहले, हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ . शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:10-09-14

हमारी भक्ति मार्ग की भूलो को सुधार कर, ज्ञान से सत्य मार्ग दिखलाने वाले, सच्चे गीता ज्ञान-दांता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - जैसे तुम्हें इस बात का निश्चय है कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं, वह हमारा प्यारा-प्यारा पिता हैं, ऐसे दूसरों को समझाकर निश्चय कराओ फिर उनसे ओपीनियन लो.

बाबा ने आज हमें, दूसरों को ज्ञान देकर चार बातों का निश्चय करवाने को कहा हैं - १. ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं. २. गीता का भगवान शिवबाबा हैं, श्रीकृष्ण नहीं. ३. यह सारा कल्प ५ हजार साल का ही हैं, न की लाखों वर्ष का. ४. पतित-पावनी गंगा नहीं परन्तु परमपिता-परमात्मा शिव हैं.

यह चारों बातों पर विचार-सागर-मंथन करें तो बहुत कुछ लिख सकते है. इसलिए बाबा की आज की मुरली से ही कुछ पॉइन्टस निकाल कर यहाँ लिखेंगे तो हमें उस पर और विचार-सागर-मंथन कर दूसरों को समझाने में मदद मिलेगी.

१. ईश्वर सर्वव्यापी नहीं हैं. - यह तो बाप ने समझाया है की मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ. अभी सर्वव्यापक तो ५ विकार हैं. जो हर मनुष्य में है और इसलिए ही हरेक मनुष्य आज दुखी है. ईश्वर तो सर्व का सद्गति दांता हैं. सर्व को सुख और शांति प्रदान करता हैं. ईश्वर को सर्वव्यापी कहना तो ईश्वर की सबसे बडी ग्लानि हैं. अगर ईश्वर सर्वव्यापी होगा तो सारे संसार में इतने लड़ाई-झगड़े कैसे हो सकते है?, इतना दुख-अशांति कैसे हो सकती है?

२. गीता का भगवान शिवबाबा हैं, श्रीकृष्ण नहीं. - भगवान या ईश्वर कोई मनुष्य या देवी-देवता को नहीं कहा जाता. भगवान तो एक है और वह सर्व-आत्माओं का पिता है. श्रीकृष्ण को तो विश्व की सर्व-आत्माये पिता या भगवान भी नहीं मानेगी. एक चैतन्य ज्योति स्वरूप, परमपिता-परमात्मा, निराकार शिव के लिए ही कह सकते हैं की वह हम सब आत्माओं का पिता हैं और क्योंकि वह ज्योति स्वरूप हैं उसे सर्व-धर्म कि आत्माये भी पिता मानती हैं. वह

मनुष्यों ने लिखी गीता से राजाई थोड़ी प्राप्त होती है, यहाँ परमात्मा की सच्ची गीता सुनकर और ज्ञान को अपने में धारण करने से हम सतयुग में सारे विश्व के मालिक बनेंगे.

३. यह सारा कल्प ५ हजार साल का ही हैं, न की लाखों वर्ष का. - शास्त्रों में यह बड़ी भूल कि है की सृष्टि चक्र को लाखों वर्ष का कह दिया हैं. इसलिए समझते है की कलियुग तो अभी बच्चा है. पहले सन्यासी भी कल्प की आयु के बारे में नेती-नेती करते थे. रचयिता बाप ने हमें समझाया की इस सृष्टि का रचयिता, परमात्मा स्वयं आकर ही रचना के आदि-मध्य-अंत का सच्चा ज्ञान दे सकते हैं. बाबा ने कहा है यह सारा कल्प तो ५ हजार वर्ष का ही हैं, जिसमें सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग - ऐसे चार भाग हैं और हर भाग १२५० वर्ष का ही हैं. इस के रिलेटेड ही एक और बात कि भगवान युगे-युगे नहीं पर कल्प के अन्त में यानी कलियुग के अन्त में और सतयुग शुरू होने से पहले, संगम पर ही आते हैं.

४. पतित-पावनी गंगा नहीं परन्तु परमपिता-परमात्मा शिव हैं. - यह बात तो बहुत सिम्पल हैं और अभी तो कई समझते भी हैं की गंगा के पानी से आत्मा में रहे मैल नहीं धुल सकते. उसके लिए तो आत्मा को परमात्मा से योग करना पड़े. योग-अग्नि से ही आत्मा में रहे विकार रूपी मैल को जलाकर राख कर सकते हैं. जब आत्मा में से संपूर्ण विकार निकल जाये तब आत्मा पतित से संपूर्ण पावन-पवित्र बने और अपने घर वापस परमधाम जा सके.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-09-14

हर रोज अपने महावाक्यों से हमें सहज पुरुषार्थ करवा कर, आप समान संपूर्ण-पावन बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - अभी तुम यहाँ बैठे हो, तो तुम्हारा बुद्धियोग घर में, बाप में और राजधानी में है. यह तो पक्का-पक्का याद कर लो क्योंकि यह तो गायन है अन्त मति सो गति.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें बार-बार अपने घर की, बाप की और नई दुनिया की याद दिलाई और हमारी बुद्धि को प्रैक्टिस कराई की कैसे हमें यह तीनों को बार-बार याद करना है.

मीठे धर की, मीठे बाबा की और मीठी नई दुनिया के बारे में बाबा ने जो भी महावाक्य आज मुरली में कहे, उसे एक बार आत्मा-अभिमानी बनकर पढेंगे तो हमें अच्छी याद करने कि प्रैक्टिस होगी.

मीठे घर-परमधाम, मीठे बाबा और मीठी नई दुनिया की याद के लिए कहे गये महावाक्य -

- यह सिर्फ तुम बच्चे जानते हो, की हम आत्मायें दूरदेश की रहने वाली है और दूरदेश में रहने वाले बाप को भी बुलाते हो कि आकरके हमको भी वहाँ दूरदेश में ले जाओ. अब दूरदेश का रहने बाला बाप तुम बच्चों को वहाँ ले जाते हैं.

- तुम रुहानी पैसेन्जर्स हो क्योंकि रुह ही ट्रैवलिंग करेगी. रुह कहाँ जायेगी? अपनी रुहानी दुनिया में. बच्चों को बाप ने समझाया है अब धर वापस जाना है, जहाँ से पार्ट बजाने यहाँ आये हैं. अभी यहाँ तुम पढ़ रहे हो, जानते हो भगवान शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं. भगवान तो सिवाय इस पुरुषोत्तम संगमयुग के सारे कल्प में कभी पढ़ायेंगे नहीं.

- पढ़ाई भी कितनी सहज है, अब घर जाना हैं. लेकिन हम जब तक पवित्र नहीं बने हैं तो घर जा नहीं सकेंगे. बाप को याद करते रहेंगे तब ही उस योगबल से पापों का बोझा उतरेगा. अब पवित्र तो जरूर बनना है.

- बाप बैठकर समझाते है, जैसे तुम परमधाम से यहाँ आते हो पार्ट बजाने, वैसे मैं भी आता हूँ. तुम मुझे निमंत्रण देकर बुलाते हो - हे बाबा, हम पतितो को आकर पावन बनाओ. देखो और कोई भी आत्मा के लिए ऐसे नहीं कहेंगे, अपने धर्म-स्थापक याँ धर्म-गुरुओं के लिए भी ऐसे नहीं कहेंगे कि आकर हम पतितो को पावन बनाओ, सिर्फ बाप को ही पतित-पावन करके बुलाते हैं.

- यहाँ से वापस घर जाने का रास्ता बतलाने वाला, सर्व का सद्गति करने वाला, सच्चा सतगुरु, अकाल मूर्त एक ही बाप हैं. वह सतगुरु स्वयं ही आकर अपना परिचय देते है - मैं तुम्हारे मिसल जन्म नहीं लेता हूँ. यहाँ तुमको रुहानी बाप बैठ समझाते हैं. अब तुम्हारी बुद्धि में है की यह चक्र कैसे घुमता है.

- गीता में लिखा हुआ है मनमनाभव, यह अक्षर तो मशहूर है. सारी आयु गीता पढ़ते आये लेकिन कुछ समझते नहीं थे. अब वही गीता का भगवान बैठ सिखलाते है, मीठे बच्चे - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो पतित से पावन बन जायेंगे.

- अब बाप कहते है - बच्चे, मुझे याद करते हो? ऐसे कभी सुना कि बाप बच्चे को कहे तुम मुझे याद करो. यह बेहद का बाप बैठ समझाते है. तुम सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त को जानकर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे. पहले तुम जायेंगे घर फिर आना है पार्टधारी बनकर.

- बाप बैठ समझाते है - हे आत्माये तुम कितना जंगली कांटा बन पड़े हो, दूसरों को कांटा (दुख) लगाते हो तो तुमको भी कांटा लगता है. रिसपोन्ड हर बात का मिलता है. वहाँ दुख की छी-छी बाते कोई होती नहीं इसलिए उनको कहा जाता है स्वर्ग.

- अब तुम जानते हो - यह मुक्तिधाम (मूलवतन) तो आत्माओं का घर है. मूलवतन का राज तुमको बाप बिगर कोन समझायेंगे. तुम्हें सारी दुनिया को मैसेज देना है - बाप आये है, सिर्फ कहते है मामेकम याद करो. वह बाप ही सब आत्माओं का लिबरेटर है, गाइड है. बाप कहते है, जो बहुत याद करते है, दूसरों को भी आप समान बनाते है, कांटों को फूल बनाते है वह सतयुग में बहुत ऊँच पद प्राप्त करते है. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-09-14

ज्ञान सागर बाप ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को भक्ति और ज्ञान का अंतर समझाते हुए कहा, मीठे बच्चे - यह ज्ञान मार्ग है, ज्ञान सागर एक ही बाप होता है, ज्ञान सिखाने के लिए बाप को आना पड़ता है क्योंकि वही ज्ञान का सागर है. वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं कि मैं सर्व आत्माओं का बाप हूँ.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों का भक्ति और ज्ञान का अंतर, अलग-अलग उदाहरणों देकर के समझाया है जिसे की हम समझकर औरो को भी समझा सके और दूसरों का भी कल्याण करें.

- भक्ति में गुरु लोगों की दृष्टि रहती है कि यह हमारे शिष्य हैं अथवा फालोअर्स वा जिज्ञासु हैं, तो हल्की दृष्टि हो गई ना. शिष्यों भी उनको अपना गुरु समझते हैं, दृष्टि ही वही रहती है कि यह हमारा गुरु है. गुरु के लिए रिगार्ड रखते हैं. तो गुरु-शिष्य दोनों देखते है शरीरों को और रहते भी देह-अभिमानी होकर. यहाँ ज्ञान में तो बहुत फर्क हैं, यहाँ बाप ही बच्चों का रिगार्ड रखते हैं. जानते है इन बच्चों को पढ़ाना है सतयुग के लायक बनाना हैं. बाप तो सदा देही-अभिमानी है और बच्चों को भी देही-अभिमानी बनाते हैं.

- भक्ति में उन गुरुओं की दिल में बच्चे का लॅव नहीं होगा. यहाँ ज्ञान में बाप का तो बच्चों से बहुत लॅव रहता है और बच्चों का भी बाप पर लॅव रहता है.

- भक्ति में आधालक्प शास्त्र आदि सुनते, कर्मकाण्ड करते, गायत्री, संध्या आदि करते भी परमात्मा को नहीं जानते थे. इसलिए परमात्मा के बारे में कहते थे वह तो सर्वव्यापी है. यहाँ ज्ञान में तो परमात्मा ही स्वयं आकर हमें राजयोग सिखाते हैं, जिससे हम मनुष्य से देवता अर्थात राजा बन सकते है. परमात्मा हमें सृष्टि चक्र का सारा राज समझाते हैं, जिससे हम चक्रवर्ती राजा बन सकते है.

- भक्ति में सबकुछ करते भी हमारी आत्मा तो पतित ही बनती जाती हैं. यहाँ पतित-पावन, परमात्मा, बाप स्वयं हम आत्माओं को पतित से पावन बनने की युक्ति बताते है. वह सर्वशक्तिमान बाप खुद कहते है - मुझे याद करने से ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे क्योंकि योग अग्नि है ना.

- भक्ति में हम श्रीकृष्ण को ही भगवान समझते है. यहाँ ज्ञान में स्वयं परमात्मा शिवबाबा ने समझाया की श्रीकृष्ण तो महात्मा है क्योंकि श्रीकृष्ण है संपूर्ण निर्विकारी. श्रीकृष्ण को भगवान नहीं, देवता कहा जाता हैं.

- भक्ति में संसार को त्याग, जंगलों में चले जाने को ही सच्चा सन्यास समझते थे. यहाँ ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की वह तो हद का सन्यास है, उसे आत्मा को मुक्ति-जिवनमुक्ति प्राप्त नहीं होती. अभी हम ब्राह्मण गृहस्थ आश्रम में रहते संपूर्ण पवित्र रहते है और सारी पुरानी दुनिया को मन-बुद्धि से भूलने का पुरुषार्थ करते है उसे ही बेहद का सन्यास कहा जाता है, जिसे आत्मा को सच्ची मुक्ति-जिवनमुक्ति प्राप्त होती हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:13-09-14

हम बच्चों को इस बेहद की सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर, सतयुग का मालिक बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है, इस पढ़ाई से २१ जन्मो के लिए कमाई का प्रबन्ध हो जाता है.

बाबा हमें दो बात हर मुरली में कहते है - मीठे बच्चे, बाप और वर्से को याद करों. यह भी हम जानते है की बाप को याद करने से आत्मा पवित्र-पावन बनती है और वर्से को याद करने से सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता हैं. हमारी दिव्य बुद्धि जब वर्से को याद करती है तो वर्से को प्राप्त करने के लिए हमारी आत्मा पुरुषार्थ करती है यानी आत्मा पवित्र रहने का और दैवी-गुण धारण करने का पुरुषार्थ करती है. दूसरा जितना हमने सृष्टि चक्र का ज्ञान समझा होगा उतना हम अच्छी तरह से औरो को भी समझा पायेंगे. इसलिए बुद्धि जैसे बार-बार बाप को याद करती है वैसे सारे सृष्टि चक्र को भी बार-बार याद करना चाहिए.

आज सारी मुरली में बाबा ने हमें जितनी बार सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की याद दिलाई उसे फिरसे एक बार पढ़कर याद करेंगे.

- इस समय बाप तुम बच्चों को रुहानी दुनिया में ले जाते हैं. उनको कहा जाता है रुहानी दैवी दुनिया (सतयुग), इसको कहा जाता है जिस्मानी दुनिया.

- बच्चे समझते हैं दैवी दुनिया थी, वह दैवी मनुष्यों की पवित्र दुनिया थी. अभी मनुष्य अपवित्र हैं इसलिए उन पवित्र देवताओं का गायन पूजन करते हैं.

- इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कल्पवृक्ष कहा जाता है. सृष्टि के आदि में जब आदि सनातन दैवी-देवता धर्म होता है तो छोटा-सा दैवी झाड़ होता है. फिर उनमें और धर्मों की वृद्धि होती जाती है तो झाड़ बड़ा होता जाता है. झाड़ बढ़ते-बढ़ते अभी कितना बड़ा हो गया है. अभी आदि सनातन दैवी-देवताओं का झाड़ है नहीं और सब टाल-टालियां खड़ी हैं. इस बनेन ट्री का मिसाल, कल्पवृक्ष की आयु अब पूरी होती है.

- अभी तो भक्ति करने के लिए मनुष्य गुरुओं के पास जाते है. कुम्भ के मेले पर कितने ढेर आते हैं. सतयुग में तो यह कुछ भी नहीं होगा. बाबा ने हमें रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं.

- आधाकल्प है ज्ञान, आधाकल्प है भक्ति. ज्ञान से है कमाई, भक्ति से है घाटा. टाइम पर जब घाटे का समय पूरा होता है तो फिर बाप कमाई कराने आते हैं.

- वह है ब्रह्मलोक, निराकारी दुनिया और यह है साकारी दुनिया. हम आत्माये सृष्टि के आदि से उस निराकारी दुनिया से यहाँ साकारी दुनिया में पार्ट बजाने आते हैं. हम आत्माये चैतन्य पार्टधारी हैं. हमें इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान हैं.

- हम जानते है की एक सच्चा बेहद का बाप ही हमें सच बतलाते है जिसे की हम सचखंड के मालिक बन जाते हैं. सच के ऊपर भी सुखमनी में है. सत कहा जाता है - सचखंड (सतयुग) को. वहॉ हम देवताये सदा सच बोलते हैं. हमें सच सिखलाने वाला है बाप.

- यह सारा सृष्टि का चक्र है, ज्ञान और भक्ति का खेल. यह चक्र फिरता ही रहता है. हमेशा कहते भी है ज्ञान, भक्ति और वैराग्य. ज्ञान में है सुख और भक्ति में है दुख. तो पहले है ज्ञान (सतयुग-त्रेता में देवी-देवताओं को सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं होगा पर स्वयं आत्मा है उसका पूरा ज्ञान होगा और इस ज्ञान के आधार पर ही वह सुखी रहते है) फिर है भक्ति (द्वापर-कलियुग में मनुष्य भक्ति करते है, उनको ना सृष्टि चक्र का, ना स्वयं का ज्ञान होता है). अभी हम जानते है की जब भक्ति से दुखी होते है तो फिर हम ब्राह्मण भक्ति से वैराग्य करते है और ईश्वरीय ज्ञान को धारण करते हैं.

- सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान होते है. यहाँ कलियुग के अन्त में हमारी आत्मा और शरीर दोनों तमोप्रधान बन जाते हैं. अब बाप आकर हमारी आत्मा को वापस सतोप्रधान बनाते हैं. भले यहॉ आत्मा पवित्र बनती है, परन्तु शरीर फिर भी अपवित्र रहता है जब तक आत्मा की कर्मातित अवस्था हो. यह सारा ज्ञान अब हमारी बुद्धि में हैं. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:14-09-14

अपने अमूल्य ज्ञान के खजानों से हम बच्चों को सम्पन्न कर, हमें स्वराज्य अधिकारी बनाने वाले, बापदादा ने कहा - व्यर्थ संकल्पों के विघ्नों से मुक्त होने की सहज युक्ति है निमित्त और ट्रस्टी भाव में रहना, निश्चिन्त और निश्चय बुद्धि बनना.

आज की मुरली में बापदादा ने हम ब्राह्मण बच्चों को कोन से व्यर्थ संकल्प आते है वह स्पष्ट समझाया है और उसके कारण हमारे ब्राह्मण जीवन में क्या विघ्न आते है और उसे कैसे पार करना है, उसकी युक्तियाँ भी बताई है, उसे एक बार पढ़कर हमारे में चेक करें.

- पुरुषार्थ में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाई नई देता और सोच में पड़ जाते है कि आगे क्या होगा? जिसके कारण तीव्रगति वा तीव्र पुरुषार्थी से सामान्य पुरुषार्थी बन जाते है. फिर कई थक जाते, कोई दिलशिकस्त हो जाते अर्थात अपने से नाउम्मीद हो जाते है और खुद को बेसहारा अनुभव करते है.

इसको पार करने कि युक्ति है - सेकेण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात आत्मिक ज्योति स्वरूप और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप - यह डबल लाइट स्वरूप में स्थित होना. खुद को आत्मा समझ इस बेहद के ड्रामा में पार्टधारी हूँ, बाबा ने मुझे यह पार्ट बजाने को निमित्त बनाया है. यह आत्मिक-निमित भाव हमारे कई व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देता है तो हमें इसकी प्रैक्टिस करनी हैं.

- कई ब्राह्मणों को विनाश के बारे में बहुत व्यर्थ संकल्प चलते है जैसे कि बाबा ने कितने सालो पहले कहा था - तुम अगली दीवाली नहीं देखोगे और अभी इतने साल हो गये फिर भी कुछ भी हुआ तो नहीं. नामालूम विनाश होगा या नहीं होगा (ड्रामा पर विश्वास नहीं), भगवानुवाच ठीक है वा नहीं है (भगवान में निश्चय नहीं), दुनिया के आगे निश्चय से कहें वा नहीं कहे, गुप्त रहें वा प्रत्यक्ष होवें - जमा करें या सेवा में लगाये, प्रवृति को सम्भाले वा सेवा में लगें (स्वयं में निश्चय नहीं). समझा कैसे हमारे व्यर्थ संकल्प ही हमें ड्रामा में, बाबा में और स्वयं के निश्चय को हिला देता हैं.

बापदादा ने इसको पार करने कि सहज युक्ति बतलाते हुए कहा - स्वयं को ट्रस्टी समझ कर चलो. विनाश के लिए या स्वयं को प्रत्यक्ष करने से या सब को विनाश के बारे में बताने से, उसके रिज़ल्ट कि चिंता हमें नहीं करनी है. बाबा ने कहा और हमने किया - यहीं होना चाहिए. अगर बाप ने कहा है और हम कर रहे है तो जिम्मेदार बाप हो जाता हैं. इसे बुद्धि में रखने से हम सदा के लिए निश्चिन्त बुद्धि बन जायेंगे.

- सर्व प्रकार के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करने कि सहज युक्ति है - सदा निश्चिन्त और सदा निश्चय बुद्धि बनना.

सदा निश्चिन्त बुद्धि बनने के लिए ट्रस्टी भाव जीवन में अपनावों.

सदा निश्चय बुद्धि बनने के लिए हमें प्रैक्टिस करनी है कि में विश्व-कल्याणकारी बाप का बच्चा हूँ और यह मेरा सारे कल्प में सर्व-श्रेष्ठ कल्याणकारी ब्राह्मण जीवन हैं. मेरे हर कदम में पदमों की कमाई हो रही हैं. मेरे यह ब्राह्मण जीवन में जो भी समय पास्ट हुआ - अच्छा समय था, अभी जो समय जा रहा है - वह भी बहुत अच्छा जा रहा है और आगे जितना भी समय मेरे पास है - बहुत-बहुत अच्छा समय होगा.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-09-14

सारी सृष्टि चक्र के कल्पवृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, हमें मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - ज्ञान का तीसरा नेत्र सदा खुला रहे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जायेंगे, खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा.

बाबा ने हम बच्चों को तीन मुख्य बातों का ज्ञान दिया हैं - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान. जब हम पहेली बार इस ज्ञान को सुनते है तो हमारी आत्मा में लाइट आ जाती हैं. बाबा से हमें दिव्य बुद्धि का वरदान प्राप्त होता हैं और हमारी बुद्धि का ताला खुल जाता हैं. अब हमारी बुद्धि सही (ज्ञान) और गलत (भक्ति) के अंतर को समझ सकती हैं. आज बाबा ने कहा बुद्धि का ताला खुलने को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला कहते हैं. अब हमारी आत्मा को स्वयं का, परमात्मा का और सारी सृष्टि चक्र के कल्पवृक्ष का सच्चा ज्ञान मिलने से आत्मा को इतनी सारी प्राप्ति होती है जिसे की आत्मा तृप्त हो जाती है. तृप्त आत्मा ही ईश्वर से योग लगाकर अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करती है तो आत्मा खुशी से झूम उठती है. हमारी आत्मा इस ज्ञान का विचार-सागर-मंथन करती है और इसमें से ज्ञान-रत्न निकालती है और उसे धारण करती है तो आत्मा की खुशी और बढ़ती जाती है जिसे ही आज बाबा ने कहा खुशी से रोमांच खड़े हो जाते है और ऐसी आत्मा का खुशी का पारा सदा के लिए चढ़ा रहता है.

आज बाबा ने सारी मुरली में हमें गोले के, कल्पवृक्ष के और त्रिमूर्ति के चित्र को युज कर, सारी सृष्टि चक्र के ज्ञान को अच्छी तरह समझकर औरों को भी समझाने को कहा हैं. मनुष्यों की बुद्धि में यह ईश्वरीय नॉलेज सहज रूप से बैठाने के लिए ही बाबा हमें चित्रों को युज करने को कहते हैं. चित्रों से मनुष्य जल्दी ही समझ लेंगे. बाबा ने कहा है की स्वर्ग में आने के लिए मनुष्य आत्मा को यह ज्ञान को सुनना जरूरी है जब तब यह ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य आत्मा सूने नहीं तब तक उसको बाप से जीवनमुक्ति का वर्सा मिल न सके, यानी आत्मा जीवन-बन्ध से जीवन-मुक्ति में जा न सके. इसलिए जितनी भी आत्माओं का सतयुग में पार्ट है, उसे इस समय यह ज्ञान मिलना जरूरी हैं.

बाबा ने आज हमें यह भी कहा की यह साइन्स तुम्हें बहुत-बहुत मदद करेंगी तो हम देखते है की आज साइन्स की मदद से यह ज्ञान सारे संसार को मील रहा हैं.

बाबा ने आज की मुरली में भक्ति मार्ग की दो बातों का राज भी समझाया हैं, जिसे हमें भक्तों को समझाने में मदद मिल सकती हैं.

१. भगवान को ज्ञान-सागर (नॉलेजफूल) क्यों कहा जाता हैं? क्योंकि भगवान की आत्मा में ही इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान हैं. हम भाग्यशाली ब्राह्मणों को यह नॉलेज इस संगम के समय पर, उस बेहद के बाप (परमात्मा या भगवान) से प्राप्त होता हैं. जब हमारी आत्मा यह शरीर छोड़कर परमधाम जाती है तो यह नॉलेज निकल जाता हैं. एक बाप की आत्मा में ही सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज सदा रहता है (संगम के समय पर ईमर्ज होता है). इसलिए ही बाप को ज्ञान-सागर कहा जाता हैं.

२. भगवान हमारे मात-पिता कैसे बनते है? बाप में सारा ज्ञान तो है लेकिन उसे हम जीवात्माओं को सुनाने के लिए ब्रह्मा के तन का सहारा लेना पड़ता हैं. जब वह परमात्मा ब्रह्मा के तन में आते है और हम बच्चों को एड़प्ट करते है तो हम बच्चे, ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मण कहलाते हैं. तो वह बेहद का शिव बाप, ब्रह्मा के मुख (एक ही शरीर, दो आत्माये) द्वारा ज्ञान सुनाकर हम ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मणों को पैदा करते हैं. इसलिए शिव हमारा पिता है और ब्रह्मा हमारी माता हैं. भगवान के इस कर्तव्य के आधार पर ही भगवान को मात-पिता कह कर पुकारते हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-09-14

पतित आत्माओं को योग सिखलाकर, पतित से पावन बनने का रास्ता बतलाने वाले, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - योगबल से बुरे संस्कारों को परिवर्तन कर स्वयं में अच्छे संस्कार डालो. ज्ञान और पवित्रता के संस्कार अच्छे संस्कार है.

यह तो हम जानते हैं की हमारी आत्मा में सात ओरिजिनल संस्कार हैं - ज्ञान, पवित्रता, शांति, सुख, आनंद, प्रेम और शक्ति. इसमें से बाकी ६ संस्कार तो हम समझ सकते है लेकिन ज्ञान का संस्कार क्या है? आत्मा को स्वयं का संपूर्ण ज्ञान होना - यह है ज्ञान के संस्कार. जब हमारी आत्मा सबसे पहले सतयुग के आदि में देवी-देवता के रूप में जन्म लेती हैं यानी आत्मा जब पहले-पहले परमधाम से इस धरती पर आती हैं तो उसमें ज्ञान का संस्कार आपे ही होता हैं. जिसके कारण ही देवी-देवताये सतयुग में नेचरल रुप से आत्मा-अभिमानी रहते हैं. उन्हें यह भी ज्ञान रहता है की हम सब आत्माये हैं और एक शरीर छोड़, दूसरा लेते है. उसके आधार से ही वह लम्बा (१५० वर्स का) जीवन जीते है और जब उन्हें अपना शरीर छोड़ना होता है तो भी पहले से साक्षात्कार होता है की अब में आत्मा यह पुराना शरीर छोड़कर नया लुंगी और खुशी से शरीर छोड़ देती है. देवी-देवताओं में दूसरा मुख्य संस्कार होता है - संपूर्ण पवित्रता, जिसके आधार से ही वह सतयुग में संपूर्ण सुख-शांति-आनंद-प्रेम से रहते है. बाबा हमें योगबल से आत्मा के बुरे संस्कारों को खत्म कर, ज्ञान और पवित्रता के संस्कार को भरने के लिए कहते हैं, जिसे की हमारी आत्मा सतयुग के देवी-देवता बनने के लायक बन जायें.

हमारी आत्मा जब कल्प के आदि में, यॉ कहे परमधाम से सतयुग आदि में इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तब हमारी आत्मा में सातों ओरिजिनल गुणों से भरपूर रहती हैं. फिर आत्मा जैसे-जैसे और जन्म लेती जाती है तो हमारी आत्मा में धीरे-धीरे विकार बढ़ते जाते है. सतयुग से त्रेता के अन्त तक आत्मा, देही-अभिमानी रहकर पार्ट बजाती है तो ज्यादा फर्क नहीं पड़ता हैं. फिर द्वापर से आत्मा, देह-अभिमानी होकर पार्ट बजाती है तो आत्मा में विकारों की कट चढ़ती जाती हैं. फिर कलियुग में और भी तीव्र गति से विकारों की कट चढ़ती जाती है.

कलियुग के अन्त में आत्मा संपूर्ण विकारी बन जाती हैं तो उसके सातों ओरिजिनल गुण ओझल हो जाते हैं. मतलब की आत्मा में सातों गुण तो हैं लेकिन विकारों के संस्कार के नीचे दब जाते हैं. अब बाबा के साथ योगबल से विकारों को जैसे-जैसे निकालते जाते हैं वैसे-वैसे आत्मा के ओरिजिनल गुण वापस इमर्ज होते जाते हैं.

ज्ञान और पवित्रता के संस्कार स्वयं में भरने के लिए, नीचे दी गई कोमेंट्रि को युज कर बाबा से योग करें.

मैं आत्मा हूँ, ज्ञान-सागर बाप से ज्ञान के संस्कार भर रही हूँ. अब मुझे अपने सत्य स्वरूप आत्मा का पूरा ज्ञान हैं. मैं आत्मा, ज्योति स्टार स्वरूप हूँ. मैं आत्मा, असूल में परमधाम में रहती हूँ. मैं आत्मा, सतयुग के आदि में इस घूरा पर पार्ट बजाने आती हूँ. मैं आत्मा, पांच तत्वों का शरीर लेकर पार्ट बजाती हूँ. मैं आत्मा, शरीर में भृकुटी के मध्य में रहकर, आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रियॉ - मन, बुद्धि और संस्कार के द्वारा इस शरीर की स्थूल कर्मेन्द्रियॉ को चलाती हूँ. मुझ आत्मा को ज्ञान-सागर बाप से दिव्य-बुद्धि का वरदान प्राप्त हुआ हैं. अब मैं आत्मा, मेरी दिव्य-बुद्धि को युज कर स्वराज्य अधिकारी बनती हूँ.

मैं आत्मा हूँ, पवित्रता के सागर से पवित्रता की शक्ति मुझ आत्मा में भर रही हूँ. यह पवित्रता की शक्ति, मेरे में रहे विकारों को नष्ट करती जा रही हैं. अब मुझ आत्मा में संपूर्ण पवित्रता के संस्कार इमर्ज हो रहे हैं. यह पवित्रता के संस्कार मेरे चित को शांत कर, मेरी वृति को पावन बना रहे हैं. पावन वृति ही मेरी दृष्टि को स्वच्छ बना रही हैं. अब मेरी कृति भी परिवर्तन हो रही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:17-09-14

सर्व-शास्त्र शिरोमणि गीता का एक मन्त्र का सही अर्थ समझाकर, हम बच्चों को मनुष्य से देवता बनने का रास्ता बतलाने वाले, गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा शिव ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - माया को वश करने का मन्त्र है मनमनाभव, इसी मन्त्र में सब खूबियां समाई हुई हैं, यही मन्त्र तुम्हें पवित्र बना देता है.

बाबा ने हमें मनमनाभव का सही अर्थ समझाया है - अपने को आत्मा समझ, मुझ परमात्मा-बाप को याद करों तो तुम्हारे सब पाप भस्म हो जायेंगे और आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगी. मनमनाभव को ही याद की यात्रा कहा जाता हैं.

आज सारी मुरली में बाबा ने मनमनाभव के महामन्त्र के महत्व को समझाया है और उसके फायदे बताये है. उसे एक बार लिखकर याद करेंगे.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से तुम बहुत-बहुत सेफ रहते हो. मूल बात ही बच्चों के लिए यह है. जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेंगी (खुद दुखी नहीं होंगे) और कैरेक्टर्स भी सुधरते जायेंगे (औरो को भी दुखी नहीं करेंगे). खुद को आत्मा समझने का पुरुषार्थ करने से ६३ जन्मो से रहा यह देह-अभिमान भी उतरता जायेगा.

- बाबा कहते है - इस मन्त्र को युज कर, तुम स्वयं को विदेही समझकर मुझ विदेही बाप को याद करते हो. इसे माया भी वश हो जाती है और तुम्हारी आत्मा भी पवित्र बन जाती हैं.

- बाबा कहते है - जो आत्माये इस समय मनमनाभव के महामन्त्र को धारण करती है वह स्वर्ग में भी ऊंच पद प्राप्त करती हैं.

- बाबा कहते है - तुम बच्चे याद की यात्रा में रहकर, जब किसी को ज्ञान सुनाते हो तो ही उस आत्मा को भी ज्ञान का तीर लगेगा. इसे ही दूसरे शब्दों में कहा जाता है, ज्ञान की तलवार में याद का जौहर चाहिए तभी सुनने वाले को भी अनुभव करा पायेंगे और अनुभव के आधार पर ही वह आत्मा बाबा की बन जायेंगी.

- बाबा कहते है - तुम जितना-जितना याद में रहेंगे, उसे तुम्हारा स्वभाव भी बहुत मीठा बनता जायेगा और वाणी में मधुरता आती जायेगी. सतयुग में देवी-देवताये सब मीठे स्वभाव के होते हैं.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से ही तुम्हारी आत्मा की बैटरी चार्ज होती है यानी आत्मा में ताकत आती हैं. आत्मा में ताकत आने से ईश्वरीय ज्ञान को सरल रूप से धारण कर सकेंगे. सारे कल्प में पार्ट बजाने के लिए तुम्हारी आत्मा अभी ही, संगमयुग पर ही याद की यात्रा पर रहकर ताकत भरती है.

- बाबा कहते है - याद की यात्रा से ही तुम्हारी कर्मेन्द्रियां सब शांत हो जाती हैं.

अभी संगमयुग का बहुत थोड़ा सा समय हमारे पास बचा है तो बाकी रहे हुए समय को सफल करने के लिए हमारे हर श्वास में बाबा की याद समाई हो.

बाबा मेरे साथ हैं, बाबा मेरे पास हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:18-09-14

अपनी याद और पढ़ाई से हम बच्चों को मनुष्य से देवता बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम बाप के पास आये हो अपने कैरेक्टर्स सुधारने, तुम्हें अब दैवी कैरेक्टर्स बनाने हैं.

यह हम सब जानते है की बाबा हमें सतयुग के लायक आत्मा बनाने के लिए हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं. फिर हम आत्माओं कहते है, अभी दो बातों का पुरुषार्थ भी करना है - १. याद की यात्रा, जिसे आत्मा पतित से पावन बन जाये. २. दैवी-गुणों की धारणा, जिसे आत्मा सतयुग के लिए लायक बने.

बाबा यह भी कहते है की पावन तो सब आत्माओं को बनना है क्योंकि पावन बने बीना तो आत्माये अपने घर-परमधाम वापस जा नहीं सकती और बाबा आये है सब आत्माओं को वापस अपने घर ले जाने के लिए तो हर मनुष्य आत्मा को पावन तो जरूर बनना पड़ेगा. बाबा यह भी स्पष्ट बताते है की अभी आत्माओं को पावन बनने के दो रास्ते है - पतित-पावन बाप की याद से पावन बने या सजाये खाकर पावन बने.

हम बच्चों को सतयुग के लायक बनने के लिए अभी दैवी-गुणों को भी धारण करना ही हैं. तो हमें स्वयं में चेक करना हैं की हमारे में कहा तक देवी-गुण आये हैं. वैसे तो देवी-गुणों की लिस्ट बड़ी लम्बी हैं लेकिन यहाँ हम मुख्य चार देवी गुणों को हमारे में कैसे चेक करें वह समझने का प्रयास करते हैं.

चार मुख्य दैवी-गुणों हैं, पवित्रता, संतुष्टता, धैर्यता और रमणीयता.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए हमारी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आँखें किसी पर भी ठहरेगी नहीं, आँखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से संबन्ध-सम्पर्क में आनेवाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई की रहती हैं.

- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं.
- स्वयं से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहनेवाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो चेक करें हम कितना ऑनेस्ट बने हैं.
- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी हम पानी पीते या खाना खाते, बाबा की याद में रहकर पवित्रता की दृष्टि देकर खाते हैं.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बाद में सोते हैं.

संतुष्टता कि चैकिंग ---

- संतुष्टतमणी आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आनेवाली आत्माये सुख, शांति, प्रेम और शक्ति अनुभव करेंगी, क्योंकि संतुष्टमणी आत्मा में सुख, शांति, प्रेम ओर शक्ति के गुन इमर्ज रुप में रहते हैं और यही हमारी चैकिंग पाईन्ट हैं की हमारे सम्बन्ध-सम्पर्क में आनेवाली आत्माये कहा तक ये गुणों का अनुभव करती हैं.
- संतुष्टतमणी आत्मा के मन में होता हैं सबको सुख देना हैं. कोई भी दुखी आत्मा उसके सामने आती हैं तो उनको पौजीटिव संकल्पों और पौजीटिव वायुमंडल देकर उसके दुख को कम करेगी. चेक करें हम ऐसा करते हैं.

धैर्यता कि चैकिंग ---

- धैर्यता वाली आत्मा में सहनशीलता बहुत होती हैं. हमेशा वह दूसरों को आगे बढ़ाने में स्वयं को सुख महसूस करती हैं. इसलिए उनके जीवन में मंत्र हैं "पहले आप". चेक करें हमारे में कहा तक सहनशीलता हैं और हम दूसरों को गिरा कर तो आगे नहीं बढ़ते.

रमणीकता कि चैकिंग --

- रमणीकता में रहनेवाली आत्मा की निशानी हैं सदा लाइट रहेंगी. रमणीकता वाली आत्मा का स्वभाव बहुत मीठा होता हैं. कोई उसका अपमान भी करें तो भी उनको अपना मित्र बना देती हैं, उनको भी प्यार देती हैं, इतनी मिठास आत्मा में होती हैं. चेक करें हम कहा तक मीठा बने हैं. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-09-14

अपने ज्ञान से हमें आत्म-अभिमानी और कर्मबन्धन मुक्त बनाने वाले, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - वास्तव में सैलवेशन आर्मी तो तुम हो जो हर एक को सैलवेज करते हो. अभी सब आत्माये 5 विकारों की जंजीरों में है तुम लाइट हाउस बन उनको लिबरेट होने का रास्ता बताते हो तो जैसे उनको सैलवेज करते हो.

बाबा ने आज हम बच्चों को चलता-फिरता लाइट हाउस और रुहानी सैलवेशन आर्मी का टाइटल देकर, उमंग उत्साह में लाकर हमें देही-अभिमानी बनने का और बाप को याद करने के लिए प्रोत्साहित किया जिसे की हम बच्चे तीव्र पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को पावन बनाये. बाबा ने आज सारी मुरली में हमें उमंग-उत्साह दिलाने और बाप को याद करने के लिए जो भी महावाक्य उच्चारण कीये उसे ही एक बार फिरसे याद करें.

- जहॉ मिलेट्री खड़ी होती है वह फिर कहते है अटेन्शन, उन लोगों का अटेन्शन माना साइलेन्स. यहॉ भी तुमको बाप कहते हैं अटेन्शन अर्थात एक बाप की याद में रहो. बाप की श्रीमत मिलती है, तुमने आत्मा को भी पहचाना है, बाप को भी पहचाना है तो बाप को याद करने बिगर तुम विकर्माजीत अथवा सतोप्रधान पवित्र नहीं बन सकते.

- मूल बाप ही यह है, बाप कहते हैं मीठे-मीठे लाडले बच्चों! अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो.

- बाबा कहते है, तुम हो अन्डरग्राउन्ड मिलेट्री. तुम भी गुम हो जाते अर्थात बाप की याद में लीन हो जाते हो. कोई पहचान न सके क्योंकि तुम गुप्त हो ना. तुम्हारी याद की यात्रा भी गुप्त है, सिर्फ बाप कहते है मुझे याद करो क्योंकि बाप जानते हैं याद से इन बिचारों का कल्याण होगा.

- बाप ने समझाया है - तुमको लाइट हाउस भी कहा जाता है. बाप को भी लाइट हाउस कहा जाता है. तुम्हारी एक आँख में शांतिधाम और दूसरी आँख में सुखधाम को रखो. उठते, बैठते, चलते तुम लाइट होकर रहो. सबको सुखधाम-शांतिधाम का रास्ता बताते रहो.

- बाप कहते है, वास्तव में सैलवेशन आर्मी भी तुमको कहा जाता हैं. तुम सब आत्माओं को ५ विकारों की जंजीरों से मुक्त होने का रास्ता बतलाते हो, जैसे दुखी आत्माओं को सैलवेज करते हो. बाप कहते है इस याद की यात्रा से तुम पार हो जायेंगे.

- बाप कहते है, बच्चे अपने को रुहानी मिलेट्री जरूर समझो. तुम जानते हो हम आत्मा हैं, हमारा धर्म ही शान्त है. अभी तुमको यह ज्ञान मिलता है. ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटतें हैं.

- बाप कहते है, तुम समझते हो - हम आत्मा शान्त स्वरूप हैं. हमको शरीर से डिटैच हो बैठना है. यहॉ तुमको वह बल मिलता है जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो.

- बाप ने कहा है ना - हे अर्जुन, इन सबको छोड़ो.....सतगुरु मिला तो इन सबकी दरकार नहीं. सतगुरु तारता है. बाप कहते हैं - मैं तुम्हें इस आसुरी संसार से पार ले जाता हूँ.

- बाप को कहा जाता है - प्राणेश्वर बाबा अर्थात प्राणों का दान देने वाला बाबा, वह अमर बना देते हैं. प्राण आत्मा को कहा जाता है. आत्मा निकल जाती है तो कहते हैं प्राण निकल गये. आत्मा बिगर तो शरीर में ही बांस हो जाती है.

- यहॉ आकर जब बैठते हो तो अटेन्शन. बुद्धि बाप में लगी रहे. तुम्हारा यह अटेन्शन सदा के लिए है. जब तक जीना है, बाप को याद करना है. याद से ही जन्म-जन्मांतर के पाप कटते हैं.

- बाप कहते है, तुम जब यहॉ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का स्वदर्शन चक्र फिरना चाहिए. तुम लाइट हाउस हो ना. यह है दुखधाम, तुम्हारी एक आंख में है दुखधाम, दूसरी आंख में है सुखधाम. उठते-बैठते अपने को लाइट हाउस समझो. जो भी मिले उसको सुखधाम और शांतिधाम का रास्ता बतावो.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-09-14

अपनी मीठी-मीठी याद से हम सजनिओं को श्रृंगार कर सतयुग के लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनाने वाले साजन-बाप ने कहा - मीठे बच्चों, तुम अपना श्रृंगार करो. टाइम वेस्ट मत करो. तुम्हारे पास टाइम बहुत थोड़ा है. तुम्हारा यह टाइम बहुत-बहुत वैल्युएबल है.
भक्तिमार्ग में जिसको पाने के लिए आज भी मनुष्यों कितना माथा मारते है, कितना जप-तप-यज्ञ करते है फिर भी उन्हें नहीं पा सकते और हम भाग्यशाली बच्चों को स्वयं भगवान आकर के हमें पढ़ाते है. क्या पढ़ाते है? मनुष्य से देवता बनने की पढाई पढ़ाते है. बाप कहते है - मेरे बच्चे जो लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी बन बिलकुल काले बन पडे है उन्हें वापस देही-अभिमानी बनने की शिक्षा देकर, याद की यात्रा सिखलाकर, वापस आप समान गोरा बनाता हूँ.
कितना महान भाग्य है हम बच्चों का जो स्वयं भगवान हमें हर-रोज नई-नई युक्तियां बताकर हमारी आत्मा को वापस पावन बनाने के लिए मेहनत कर रहे है! शुक्रिया बाबा आपका लाख-लाख शुक्रिया.
आज बाबा हम बच्चों के साजन के रुप में मिलने आये है और हम सजनियों का श्रृंगार कर रहें हैं. मीठे-साजन ने हम सजनियों के लिए जो मीठे-महावाक्य उच्चारण किये उसे एक बार फिरसे आत्म-अभिमानी होकर पढ़े तो हम आत्माओं का सच में श्रृंगार करने का अनुभव होगा.
- रुहानी जादूगर बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं - तुम यहॉ क्या कर रहे हो? बाप अथवा साजन, सजनियों को युक्ति बता रहे हैं. साजन कहते हैं - यहॉ बैठ तुम क्या करते हो? अपने को तुम ऐसे लक्ष्मी-नारायण मिसल बनने का श्रृंगार कर रहे हो.

- बाप कहते है तुम्हारी एम ऑबजेक्ट ही लक्ष्मी-नारायण मिसल बनने का हैं भविष्य अमरपुरी के लिए. यहॉ बैठ तुम क्या कर रहे हो? पैरेडाइज के श्रृंगार के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो. यहॉ बैठे हुए अपने को चेंज कर रहे हो.

- बाप ने तुम्हें मनमनाभव की एक चाबी दे दी है तो उठते, बैठते, चलते तुम अपने ही श्रृंगार में लगे रहो.

- बाबा ने बहुत छोटी युक्ति बताई है, बस एक ही अक्षर है - मनमनाभव. तुम यहाँ बैठे हो परन्तु तुम्हारी बुद्धि में है कि कैसे सारी सृष्टि का चक्र फिरता है. अभी फिरसे हम विश्व का श्रृंगार कर रहे हैं. हम कितने पदमापदम भाग्यशाली है.

- बाबा कहते है, मनमनाभव का मन्त्र कितना ऊंच है. इस योग से ही तुम्हारे पाप भस्म होते जायेंगे और तुम साफ बनते-बनते फिर कितने शोभनिक हो जायेंगे. तुम्हारी आत्मा और काया कंचन बन जायेगी. यह कमाल है ना. तो ऐसा अपना श्रृंगार करना है.

- बाप तुम्हें युक्ति बताते हैं कि ऐसा-ऐसा करने से तुम्हारा श्रृंगार बन जायेगा. बस एक ही अक्षर से, बाप की याद से तुम्हारा श्रृंगार होता है. बाबा तुम बच्चों को कितना अच्छी रीति समझाकर फ्रेश करते हैं.

- बाप आते ही हैं ऐसा श्रृंगार बनाने. कमाल शिवबाबा आपकी, आप हमारा कितना सुंदर श्रृंगार करते हो. उठते, बैठते, चलते हमको अपना श्रृंगार करना है. बाबा कहते है अब तुम्हें फिर दूसरों का भी श्रृंगार करना है.

- बाप कहते हैं - मीठे बच्चों, तुम अपना श्रृंगार करो. टाइम वेस्ट मत करो. तुम्हारे पास टाइम बहुत थोड़ा है. तुम्हारा टाइम तो बहुत वैल्युबुल है.

- बाप तो तुम बच्चों को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं. यह हैं ही ऊंच श्रृंगार वाले, तब तो उन्हों के ही चित्र हैं जिनको बहुत पूजते रहते हैं.

- बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चों, तुमने अपने बाप को भुलने से कितना श्रृंगार बिगाड़ दिया है. बाप तो कहते है चलते-फिरते श्रृंगार करते रहो.

- बाप कहते है, मैं सबका उद्धार करने आता हूँ. मैं आया हूँ तुमको विश्व की बादशाही देने. अब मुझे याद करो, टाइम वेस्ट मत करो. काम-काज करते भी बाप को याद करते रहो. इतनी सब ढेर आत्माये आशिक है एक परमात्मा मासूक की.

- बाप कहते है, सिर्फ एक अल्फ को याद करो तो तुम्हारा श्रृंगार हो जायेगा. ॐ शांति.

आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार ---------- Date: 21-09-14

हम बच्चों को सत्यता का पाठ पढ़ाकर, आप समान सत्य स्वरूप बनाने वाले, मीठे-मीठे बापदादा ने हम बच्चों को रॉयल्टी के संस्कार की सही समझ देते हुए कहा - रॉयल्टी के संस्कार वाली आत्मा में इच्छा-मात्रम-अविधा और दांता-पन के संस्कार इमर्ज रुप में होगे. ऐसे रॉयल्टी बाले किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प मात्र से भी झुकेंगे नहीं अर्थात प्रभावित नहीं होंगे. वह सदा अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों द्वारा कोई ने कोई प्राप्ति कराने वाले अर्थात देने वाले दाता होंगे.

बापदादा ने आगे कहा, ऐसी रॉयल्टी वाली आत्मा बनने के लिए किस बात की रीयल्टी हमारे में चाहिए?

- पहले अपने सत्य स्वरूप - आत्मिक स्वरूप की रीयल्टी. बापदादा ने कहा, अगर अपने असली स्वरूप (आत्मिक स्वरूप) की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी (अपनी देही-अभिमानी स्थिति) से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रॉयल्टी नजर आयेगी. जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है. ऐसी रॉयल्टी का अनुभव करेंगे.

- दूसरी बात स्मृति में भी रीयल्टी अर्थात एक बाप दूसरा न कोई. जिनकी स्मृति में सदा बाप समाया होगा उसके कर्म में या बोल में रॉयल्टी दिखाई देगी. हर कर्म सत्य अर्थात श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे. हर बोल में बाप के समान अथॉरिटी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात हर बोल समर्थ अर्थात फल देने वाला होगा. जिसको कहा जाता है सत-वचन. ऐसे कर्म और बोल में सत्यता की रॉयल्टी होगी.

- उनका सम्पर्क अर्थात संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा. जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है - ऐसे सत्यता की रॉयल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात नकली को असली बना देगा.

- ऐसी आत्मा के रीयल और रोयल नयन अर्थात दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे. बाबा हमें साकार मुरलीओं में सदा कहते है की तुम्हारी एक आँख में मुक्ति और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति होनी चाहिए यानी जिस आत्मा ने स्वदर्शन चक्र का अभ्यास बहुत-बहुत किया हो ऐसी आत्मा के नयनों से दूसरों को अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे. उनके नयन "हम सो-सो हम" के जादू के मन्त्र का अनुभव करायेंगे अर्थात ८४ जन्मो का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे. उनके नयनों से अभी-अभी स्थूलवतन - संगमयुग के सुख की अनुभव करायेंगे, अभी-अभी सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे. अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे. ऐसे उनके नयनों से एक सेकण्ड में इन चारों धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 22-09-14

आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देकर हमें मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले, ज्ञान सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बेहद की स्कॉलरशिप लेनी है तो अभ्यास करो - एक बाप के सिवाय और कोई भी याद न आये.

बाबा हमें हर मुरली में यह कहते है मीठे बच्चे, खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो. हम ब्राह्मण बच्चे चाहते भी है की बाबा की याद ही सदा रहे, दूसरा कुछ भी बुद्धि को भ्रष्ट न करें लेकिन माया भी कोई न कोई युक्ति करके बाप की याद को हटा देती है. हम माया से हार खा लेते है इसका कारण हमने इस ज्ञान का पहला लेशन, स्वयं को आत्मा समझकर चलो - पक्का नहीं किया हैं. हमने लास्ट ६३ जन्म देह-अभिमानी होकर रहे है इसलिए भी अभी देही-अभिमानी बनना, उतना ईजी नहीं हैं. इसलिए बाबा हर साकार मुरली में हमें प्रैक्टिस कराने के लिए सबसे पहले कहते है - बच्चे, खुद को आत्मा समझकर यहाँ बैठो.

बाबा की हर साकार मुरली हमें तीन बातों की प्रैक्टिस करवाती है. १. आत्म-अभिमानी बनने की २. आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने की ३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करने की या कहे स्वदर्शन चक्र फिराने की.

आज की मुरली में बाबा ने कहे महावाक्यों को ऊपर बताये तीन भागो में डिवाईड कर, तीनों का अभ्यास स्वयं पर करेंगे तो हम ईश्वरीय स्कॉलरशिप के लायक बन जायेंगे.

१. आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस के लिए --

बाबा ने कहा,

- ॐ शांति का अर्थ तो बच्चों को अच्छी रीति मालूम है - मैं आत्मा, यह मेरा शरीर. यह अच्छी रीति याद करो.
- आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है.
- आत्मा कभी घटती-बढ़ती नहीं.
- वह है इतनी छोटी आत्मा, इतनी छोटी आत्मा ही ८४ जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है.
- आत्मा ही शरीर को चलाती है.
- ऊंचे ते ऊंच बाप पढ़ाते हैं तो जरूर मर्तबा भी ऊंच मिलेगा. आत्मा ही पढ़कर मर्तबा पाती है.
- आत्मा कोई देखी नहीं जाती. कोई बहुत कोशिश करके देखें तो भी समझ नहीं सकेंगे.
- तुम समझते हो आत्मा ही शरीर में निवास करती है.

- आत्मा अलग है, जीव अलग है. आत्मा छोटी-बड़ी नहीं होती है. जीव छोटे से बड़ा होता है.
- आत्मा ही पतित और पावन बनती है. आत्मा ही बाप को बुलाती है - हे पतित आत्माओं को पावन बनाने वाले बाबा आओ.
- अपने को आत्मा समझो. यह शरीर तो मिट्टी हो जाता है.
- आत्मा अविनाशी है, शरीर तो घड़ी-घड़ी जलता रहता है. आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करो --

- भगवान माना आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं. यह तो पढ़ाने वाला है निराकार बाप. आत्मा सुनती है और परमात्मा सुनाते हैं. यह नई बात है ना.
- हम सभी आत्मायें हैं ब्राइडस (सीतायें) और वह है राम, ब्राइडग्रूम एक.
- बाबा, आप ही पतित-पावन सर्वशक्तिमान अथॉरिटी है.
- बाबा, आप हमें ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं.
- बाबा, आप हमें ब्रह्मा के मुख द्वारा राजयोग सिखाते हो.
- बाबा, हम आपको लास्ट ६३ जन्मो से ढूँढते थे, आपको पाने के लिए कितने धक्के खाते थे. अभी आप हमें भक्ति का फल देने आये हो. आप ने हमें शिवरात्रि का सही अर्थ भी समझाया है.
- बाबा, आप ही ज्ञान सूर्य, ज्ञान सागर है. आपके आने से हमारा भक्ति मार्ग का अज्ञान मिट जाता है.
- बाबा, आप की याद से ही हम आत्माये वापस गोरा बन जायेंगी.

३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करो. -

- पुरानी दुनिया में है अनेक धर्म, नई दुनिया में है एक धर्म. एक से अनेक धर्म हुए हैं फिर एक जरूर होना है.
- पहले-पहले सतयुग में हम कितने सुन्दर है. आत्मा पवित्र सुन्दर है तो शरीर भी पवित्र सुन्दर लेती है.
- वहॉ कितना धन दौलत सब कुछ नया होता है. नई धरनी फिर पुरानी होती है.
- बाप समझाते हैं तुम्हारी आत्मा जब सतयुग में है तो कितनी ऊंच है फिर पुनर्जन्म लेते-लेते सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाती है. अब बाबा फिरसे स्वर्ग की स्थापना कर रहे है. वहॉ दूसरा कोई धर्म नहीं होता.
- इस समय हम पढ़ रहे है फिर सूर्यवंशी में चले जायेंगे. यह है हम ब्राह्मणों का कुल. बाबा हमें ब्राह्मण कुल में एड़प्ट कर पढ़ाते है.

इस तरह से मुरली में से तीनों बातों पर पॉइन्टस निकाल कर, उसकी प्रैक्टिस करने से हमें बेहद की ईश्वरीय स्कॉलरशिप जरूर प्राप्त होगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 23-09-14

हम कलयुगी आत्माओं को अपनी युक्ति से संपूर्ण पवित्रता और बेहद का वैराग्य धारण कराके मनुष्य से देवता बनाने वाले बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे आपस में भाई-बहन हो. यह वन्डरफुल सतसंग है जहाँ तुम्हें जीते जी मरना सिखलाया जाता है. पवित्रता की धारणा कर जीते जी मरने वाले ही हंस बनते हैं.

आज भी कई अज्ञानी आत्माये समझती है की ब्रह्माकुमारी संस्था आपस में भाई-बहन बनाती हैं. क्योंकि उन्हें न परमपिता-परमात्मा शिव का पता है, न प्रजापिता ब्रह्मा का. उन्हें यह स्पष्ट समझाना चाहिए की हम भारतवासियों के तीन बाप है. सबसे पहले है पारलौकिक बाप - शिव, जिन्हें सर्व आत्माये पिता कहती है या कहे आत्माओं का पिता - परमपिता-परमात्मा शिव. दूसरा है अलौकिक बाप - ब्रह्मा क्योंकि वह रचयिता पारलौकिक बाप जब इस सृष्टि पर आते है तो उन्हें अपना शरीर नहीं हैं तो उन्हें ब्रह्मा के तन का सहारा लेना पड़ता हैं. ब्रह्मा का शरीर माध्यम बनता है जिसके द्वारा वह पारलौकिक बाप आकर हम आत्माओं को ऐडप्ट करते है यानी अपना वारिस बनाते हैं. वह पारलौकिक बाप, ब्रह्मा के मुख का सहारा लेकर हम मनुष्यों को आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते हैं. यह ज्ञान सुनने वाली आत्माये ही ब्रह्मा-मुखवंशावली ब्राह्मण कहलाती हैं जो सारे संसार में ब्रह्माकुमारी-ब्रह्माकुमार के नाम से जाने जाते हैं.

यह तो सब जानते है की हम सब आत्माये वह परमपिता-परमात्मा शिव की संतान है तो वह है सर्व आत्माओं का पिता इसलिए हम सब आत्माये आपस में आत्मा भाई-भाई हो जाते है. फिर जब हम ब्रह्मा द्वारा ऐडप्ट होते है तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं. इस आधार से हम भाई-बहन के नाते से बंधते हैं. ब्रह्मा ही सबसे पहली आत्मा है जिस ने सबसे पहले परमात्मा को पहचान कर, परमात्मा से सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान प्राप्त किया. फिर परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख द्वारा यह ज्ञान विश्व की अनेक आत्माओं को दिया, जिसे ब्रह्मा की प्रजा कही जाती है इसलिए ब्रह्मा का नाम आदि-देव अथवा प्रजापिता ब्रह्मा

पड़ा. फिर वही ब्रह्मा की आत्मा सतयुग में आने वाली सबसे प्रथम आत्मा बनती है तो वहाँ उन्हें संपूर्ण निर्विकारी श्रीकृष्ण के नाम से जाना जाता हैं.

परमात्मा का मुख्य कार्य ब्रह्मा द्वारा नयी सृष्टि स्वर्ग की स्थापना करना हैं. इसलिए जो आत्माये स्वर्ग में पार्ट बजाने आने वाली है उन्हों को ही परमात्मा स्वयं आकर यह ज्ञान सुनाते है और फिर उन्हों की आत्माओं को पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं. यह तो सब मानते है की देवी-देवताये सब पवित्र है तो हम मनुष्यों को ही परमात्मा यह ईश्वरीय ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनाते हैं. मनुष्य से देवता बनने के लिए यह ज्ञान सिर्फ सुनना ही नहीं लेकिन स्वयं में धारण करना भी इतना ही जरूरी हैं. इसमें सबसे मुख्य हैं - पवित्रता. आज के तमोप्रधान मनुष्य यह ऊँच ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर सके इसलिए ही परमात्मा ने ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी का टाईटल देकर, इस ज्ञान को सुनने और धारण करने वालों के लिए बाहिये दृष्टि से भाई-बहन का नाता और अन्दर की श्रेष्ठ वृति से आत्मा भाई-भाई के नाते से बाधा हैं, जिसे की वह पवित्रता की धारणा में पक्के रहे.

इस ज्ञान को धारण करने वाली आत्माओं के लिए दूसरी मुख्य धारणा है - बेहद की वैराग्यता. जिस में आत्मा को पुरानी दुनिया, पुराने साधन, पुराने सम्बन्ध और पुराने शरीर से मन-बुद्धि से वैराग्य दिलाया जाता हैं. इस दुनिया में रहते हुए भी मन-बुद्धि से किसी के प्रति (साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर) भी लगाव (मोह) न हो. इसको ही बाबा ने आज कहा तुम्हें जीते जी मरना सुखलाया जाता है. यही आत्माओं के लिए गायन है नष्टों मोहा, स्मृति लब्धा. जब आत्मा यह शरीर छोड़े तो वह एक परमात्मा की याद में ही शरीर छोड़े, दुसरा किसी में तनिक भी खिंचाव न हों.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 24-09-14

आज भी भक्ति में जिसे पाने के लिए लाखों भक्त दर-दर भटकते हैं, वही परमात्मा शिव ने हम आत्माओं को कहा, मीठे बच्चे - यह राज सभी को सुनाओ कि आबू सबसे बड़ा तीर्थ है, क्योंकि स्वयं भगवान ने यहाँ से सभी आत्माओं की सद्गति की है.

भगवान ने आज सारी मुरली में हम आत्माओं को दो बातें विश्व की सर्व आत्माओं को सुनाने के लिए कहा है - १. आबू ही विश्व में सबसे बड़ा तीर्थ हैं. २. विश्व में जो भी शान्ति के लिए कोन्फरन्स आदि करते है, उन्हें समझावो की इस धरती पर शान्ति कब थी और वापस शान्ति कैसे स्थापन हो.

- हम गिनी-चुनी ब्राह्मण आत्माये तो जानती है की सारे विश्व में आबू ही सबसे बड़ा तीर्थ हैं क्योंकि स्वयं परमपिता-परमात्मा (भगवान, ईश्वर, गोड़, अल्लाह या जिहोवाह) खुद इस धरती पर आकर, इस समय हम आत्माओं (बच्चों) को ज्ञान देते है जिसे आत्माओं को सच्ची गति-सद्गति (मुक्ति-जीवनमुक्ति) प्राप्त होती हैं. लेकिन यह बात हम दूसरों को सुनावे और दूसरे हमारी बात माने इसके लिए हमारे में - स्वयं में और परमात्मा शिव में पुरा-पुरा निश्चय होना चाहिए. क्योंकि जितना पक्का हमें यह बात का निश्चय है उतना ही हम पुरुषार्थ करेंगे इस ईश्वरीय ज्ञान को स्वयं में धारण करने का. फिर जो आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर अनुभव मूर्त बने है वह आत्माये जब यह ज्ञान को दूसरों को सुनाते है और दूसरों को अनुभव करवाते है. इसके आधार से ही दूसरे सुनने वाले भी सुनाने वाले की बात को मानेंगे. इसलिए "आबू विश्व में सबसे बड़ा तीर्थ है" यह बात सबको मनाने के लिए इस ज्ञान को स्वयं में संपूर्ण धारण कर अनुभव की आथोरिटी बनना आवश्यक हैं क्योंकि अनुभव की आथोरिटी वाली आत्माये ही अन्य को भी अनुभव करवा सकती है जिसके आधार से अन्य भी माने की सच में इन्हें भगवान मिला हैं.

- जिस आत्माने बाबा के साथ योग में परमधाम का अनुभव किया हो उसी आत्मा को मालूम हैं कि वह स्थान जहाँ सब आत्माये अपने निज स्वरूप में, निज धर्म में स्थित रहती है वहाँ की शान्ति ही अलग हैं. वहाँ की शान्ति तो हम आत्माये सतयुग में भी अनुभव नहीं कर

सकेंगे. वह अनुभव तो अभी ही संगमयुग में, इस मानव देह में रहकर, बाबा के ज्ञान के आधार से, बाबा के साथ ऐक्युरेंट योग लगाकर ही प्राप्त कर सकते हैं.

आज बाबा ने हमें इस विश्व पर शान्ति कब थी और वापस कैसे स्थापन हो उस पर बताने को कहा हैं. यह तो हम सब जानते है की इस विश्व पर शान्ति सतयुग-त्रेतायुग में थी और उसका आधार है की वहॉ सर्व आत्माये सुखी रहती हैं क्योंकि वहॉ माया-रावण नहीं हैं. मतलब की कोई भी आत्मामें अंश-मात्र भी विकार नहीं हैं. तो किसी को भी हमें इस विश्व में शान्ति स्थापना के लिए लेक्चर देना हो तो कह सकते है की इस विश्व में शान्ति स्थापन करनी हो तो विश्व में सर्व आत्माओं को सुखी बनाना जरूरी हैं और सर्व आत्माये सुखी तब बन सकेंगी जब की सब आत्माये विकारों का त्याग करेंगी. उन्हें यह समझाना जरूरी है कि हम आत्माये दुखी हमारे में रहे विकारों से ही होती हैं या कहे मनुष्य आत्मामें रहे विकार ही मनुष्य आत्मा को दुखी करते हैं और दुखी आत्माये कभी शान्ति का अनुभव नहीं कर सकती.

जब वह माने की शान्ति का आधार सुख हैं और सुख का आधार निर्विकारी बनना हैं तभी उन्हें बाबा का परिचय देकर राजयोग का ज्ञान देने के लिए तैयार कर सकते हैं.

ॐ शान्ति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-09-14

सारे विश्व की आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान की रोशनी देने के निमित बनाने वाले ज्ञान सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम हो धरती के चैतन्य ज्ञान सितारे, तुम्हें सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान की रोशनी फैलानी है.

आज भी मनुष्यों भक्ति मार्ग में स्थूल सूर्य, चन्द्र और सितारों की पूजा करते रहते है. बाबा ने इसका राज समझाते हुए कहा है की असूल में शिवबाबा है ज्ञान-सूर्य, ब्रह्मा बाबा है ज्ञान-चन्द्र और हम बच्चे है ज्ञान सितारे. उनके अभी के कर्तव्य के आधार से ही भक्ति मार्ग में मनुष्य स्थूल सूर्य, चांद और सितारों की महिमा करते हैं. सूर्य और चांद की महिमा तो सब करते है लेकिन सितारों में फिर नम्बरवार है - पुखराज-परी, नीलम-परी....

आज की मुरली से हम पॉइन्टस निकाल कर तीन मुख्य बातों का अभ्यास करेंगे. १. आत्म-अभिमानी बनने का २. आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने का ३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करने का या कहे स्वदर्शन चक्र फिराने का.

१. आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस के लिए --

बाबा ने कहा,

- मैं तुम आत्माओं का बाप हूँ. पढ़ती भी आत्मा है.

- आत्मा को आत्मा कहा जाता है. बाकी शरीरों के अनेक नाम हैं.

- इस बेहद के ड्रामा में पार्टधारी आत्मायें हैं. आत्मा ही पार्ट बजाती हैं. यहॉ बैठ बाप भी आत्माओं को देखते हैं. कितनी छोटी सी आत्मा हैं.

- आत्मा कहॉ रहती है? कहेंगे हम अपने घर परमधाम में रहने वाले हैं फिर हम यहॉ आते हैं बेहद का पार्ट बजाने.

- एक तो अपने को आत्मा समझो. मूल बात ही यह है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करो --

बाबा ने कहा,

- तुम बच्चे (आत्माये) जानते हो तुमको पढ़ाने वाला इनकारपोरियल शिवबाबा है. उनको अपना शरीर नहीं है. कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ.

- यह तो एक ही बाप, टीचर, सतगुरु है.

- बाप तो सदैव परमधाम में ही रहते हैं. वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं.

- अभी बाप तुम बच्चों को अमरकथा सुना रहे हैं.

- भगवानुवाच - मनमनाभव (स्वयं को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो)

- इस मुख द्वारा तुम बच्चों को ज्ञान दूध पिलाता हूँ तो तुम्हारे जो पाप हैं वह सब भस्म होकर तुम्हारी आत्मा कंचन बनती है.

- तुम्हारी आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? इसके लिए याद की यात्रा हैं.

- कहा भी जावो एक-दो को सावधान करो - मनमनाभव. शिवबाबा याद है? एक-दो को यही इशारा देना हैं. तुम बाप को याद करते रहो तो आत्मा एकदम पवित्र हो जायेंगी.

३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करो. -

बाबा ने कहा,

- अभी तुमको रचता बाप, अपना और रचना का सार सुनाते हैं. तुमको कहते है स्वदर्शन चक्रधारी बच्चे.

- यह भी तुम जानते हो. शूद्र थे तो भी मनुष्य ही थे, अभी ब्राह्मण बने हैं तो भी मनुष्य ही हैं फिर देवता बनेंगे तो भी मनुष्य ही रहेंगे. परन्तु कैरेक्टर बदलते जाते हैं.

- तुम भी हो मनुष्य. परन्तु तुम्हारी आत्माको बाप पवित्र बनाये विश्व का मालिक बनाते हैं. कितनी ताकत बाप वर्से में देते हैं. ऑलमाइटी बाप है ना.

- अभी तुम्हारी आत्मा प्योर कंचन बन जाती हैं तो फिर सतयुग में तुम्हें काया भी कंचन मिलती हैं. फिर आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी उतरते हैं.

- यह पढ़ाई ही सोर्स ऑफ इनकम है. जिससे सारा आसमान, धरती आदि सब हमारे हो जाते हैं. उसको कहा जाता है अडोल राज्य. कोई भी खण्डन कर न सके. कोई जला न सके.

- तुम जानते हो बाप हमको अमरकथा सुना रहे है अमरलोक के लिए. अब तुम मीठे-मीठे बच्चों को ऊपर से लेकर सारा चक्र बुद्धि में है.

इस तरह से मुरली में से तीनों बातों पर पॉइन्टस निकाल कर, उसकी प्रैक्टिस करने से हमारी स्थिति आत्मा-अभिमानी बनती जायेंगी और हमारी आत्मा को बाप और वर्से की याद भी सहज रहेंगी. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 26-09-14

हम आत्माओं को सत्य ज्ञान और योग सिखलाकर राजयोगी बनाने वाले, परमात्मा शिव बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारा काम है अपने आपसे बातें कर पावन बनना, दूसरी आत्माओं के चिंतन में अपना टाइम वेस्ट मत करो.

बाबा ने हम बच्चों को आत्मा का, परमात्मा का और इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. आत्मा कहा रहती है? कैसे पार्ट बजाने आती है? आत्मा कैसे पावन से पतित बनती है? आत्मा को फिर पावन कैसे बनना है? बाबा हमें यह सब बातों का ज्ञान देकर, फिर सार में कहते है - मनमनाभव.

मनमनाभव का अर्थ है - स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा-बाप को याद करों. बाबा हमें सारा ज्ञान इसलिए देते है कि हम आत्माये याद की यात्रा का पुरुषार्थ कर पतित से पावन बन जायें, जिससे इस धरती पर पावन दुनिया स्थापन करने में हम बाबा की मदद करते है और इसके बदले बाबा हमें पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं.

आज बाबा ने हम बच्चों को तीव्र पुरुषार्थ करने की एक पाईन्ट सुनाते हुए कहा की परचिंतन-परदर्शन में अपना अमूल्य समय वेस्ट न करके स्वचिंतन-स्वदर्शन में रहकर स्व-उन्नति के मंथन में रहो. अपनी अवस्था अन्तरमुखी बनावो.

बाबा ने फिरसे आज याद की यात्रा पर जोर देते हुए कहा, अगर याद नहीं करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे. इतना ऊँच पद पा नहीं सकेंगे इसलिए कहा जाता है अटेन्शन. आज की मुरली से बाबा ने जो भी आत्मा और परमात्मा के बारे में महावाक्य कहे है उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति बनाकर बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे तो हमारी आत्मा मनमनाभव के मन्त्र की धारणा में पक्की होती जायेगी.

- बाबा कहते है, मुल बात है याद की. याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन वापस घर जाना हैं.

- बाप को याद करने की विधि है - मैं आत्मा हूँ. शिवबाबा को याद करता हूँ.

- आत्मा को ही यह जो नॉलेज मिलती है, उनको ही ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता हैं. आत्मा को ही सुख-दुख होता है शरीर के द्वारा. आत्मा ही सतयुग में देवी-देवता बनती हैं फिर कलियुग में बैरिस्टर-डोकटर आदि बनती हैं.

- बाबा कहते है - हे आत्मा, देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोडो और मुझे याद करो, मेरे पास ही तुम्हें आना हैं.

- बाबा कहते है - हे आत्मा, तुम्हारा घर भी ऊपर हैं. लेकिन वहॉ कोई पतित आत्मा जा न सके. अब पावन बनने के लिए तुम्हें बुद्धि का योग बाप से लगाना हैं.

- बाबा कहते है - बस, तुम मुझे याद करो. तुम्हें मुझ से वर्सा लेना हैं, और बातों में नहीं जाना हैं. इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते है अटेन्सन.

- बाबा कहते है - यह पक्का याद रखो. हमारा बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है.

- बाबा कहते है - भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ. और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-09-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर उत्तम-पुरुष बनाने वाले, सर्वोत्तम भगवान शिव ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें यह बात सर्व को बतानी है की यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो सारे कल्प में एक ही बार आता है.

यह तो हम सब जानते हैं की अभी बाबा आये हैं हम आत्माओं को पवित्र बनाकर वापस घर ले जाने के लिए फिर वहॉ से हम आत्माये वापस नम्बरवार अपना-अपना पार्ट बजाने इस धरा पर आयेंगे. फिर धीरे-धीरे हमारी आत्मा की पवित्रता जन्म -बाय- जन्म, सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में कम होती जाती है और कलियुग के अन्त में हमारी पवित्रता संपूर्ण नष्ट हो जाती हैं. तब सर्वोत्तम (सर्व आत्माओं में उत्तम) भगवान शिव इस धरा पर आते है और पुरुषोत्तम संगमयुग प्रारंभ होता हैं.

आज बाबा ने हमें आत्माओं को पुरुषोत्तम बनाने वाले इस पुरुषोत्तम संगमयुग की महिमा सब को बताने को कहा है इस पर ही हम विचार-सागर-मंथन कर कुछ पॉइन्ट्स निकालेंगे.

- पुरुषोत्तम शब्द का मतलब है - उत्तम-पुरुष और पुरुष कहा जाता है आत्मा को. पुरुषोत्तम को कहा जाता है उत्तम-आत्मा. बाबा ने ही हमें समझाया है की इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट बजाते, आत्मा ही उत्तम से कनिष्ठ और फिर कनिष्ठ से उत्तम बनती हैं.

- पुरुषोत्तम आत्मा माना संपूर्ण निर्विकारी आत्मा. पुरुष और स्त्री दोनों उत्तम बनते हैं इसलिए नाम ही है पुरुषोत्तम.

- ड्रामा में पार्ट बजाते-बजाते, कलियुग के अन्त में जब हम आत्माये संपूर्ण कनिष्ठ बन जाती है तब सर्वोतम भगवान शिव स्वयं इस धरा पर आकर हमें ज्ञान और योग सिखलाकर वापस संपूर्ण निर्विकारी - पुरुषोत्तम बनाते हैं.

- जब परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर आते हैं तब से पुरुषोत्तम संगमयुग प्रारंभ होता हैं.

- पुरुषोत्तम का मतलब तो हमने समझा लेकिन इसको संगमयुग कहा जाता है क्योंकि इसी समय आत्मा और परमात्मा का मिलन (संगम) होता हैं. बाबा कहते है कुंभ मैले में तो

तुम जन्म -बाय- जन्म कितनी बार गये हो लेकिन वहॉ गंगा में स्नान करने से तुम्हारी आत्मा पावन नहीं बनती है. सत्य हकीकत यह है की तुम्हारी आत्मा तो इस परमात्मा के ईश्वरीय ज्ञान-गंगा से ही पावन होती हैं.

- पुरुषोत्तम संगमयुग का दूसरा अर्थ है - कलियुग का अन्त और सतयुग आदि का संगम.

- इस संगमयुग को सबसे सुहावना और कल्याणकारी युग भी इसलिए कहा जाता हैं जब की स्वयं भगवान शिव इस धरा पर आकर विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करते हैं.

- आज की मुरली में बाबा ने इस पुरुषोत्तम संगमयुग का एक और अर्थ बताया है - वेश्यालय का अन्त, शिवालय का आदि. अब है वेश्यालय जहॉ सर्व आत्माये विकारी हैं फिर होता है शिवालय (सतयुग) जहॉ सर्व आत्माये निर्विकारी हैं.

- भगवान की महिमा में गाते भी है, वह है ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, पतित-पावन. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही ज्ञान से आत्माओं की सद्गति करते हैं. शिवबाबा कहते है भक्ति से किसी की सद्गति नहीं होती, इस ईश्वरीय ज्ञान से ही सद्गति होती हैं.

भक्ति मार्ग में आज भी पुरुषोत्तम मास की महिमा बहुत है लेकिन सत्य जानते नहीं की कब और क्यों पुरुषोत्तम मास होता है. उन आत्माओं को इस पुरुषोत्तम संगमयुग का सत्य परिचय देंगे तो उनका भी कल्याण हो जायेगा.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 28-09-14

सारे कल्प के लिए, हम बच्चों का श्रेष्ठ -ते- श्रेष्ठ भाग्य लिखने वाले, विधाता - बाप और भाग्यविधाता - दादा ने हम बच्चों की जन्म-कुण्डली देखते हुए कहा, हर कल्प की अति समीप आत्माओं का रूप, रेखा और वेला होता है - सदा सर्व स्वरूप के प्राप्ति के खजाने का अनुभव करने वाले, नेचरल निश्चय बुद्धि और बाप को एक सेकेण्ड में देखते ही जान जाने वाले होंगे.

आज बापदादा हम बच्चों के दिव्य जन्म की रुप-रेखा और जन्म की घड़ी अर्थात वेला को देखते हुए कहा अब स्वयं में चेक करो की हम किस प्रकार की आत्मा है? क्योंकि हरेक की वेला और रूप रेखाओं के आधार पर ही उस आत्मा का वर्तमान संगमयुगी जीवन और भविष्य जीवन का आधार है.

- रुप में कोन सा प्रकार?

१. जन्मते ही शक्ति स्वरूप की झलक रही.

२. वियोग से योग की रेखा अर्थात तड़प वा प्यास-रूप रहा.

३. सेवाधारी स्वरूप रहा.

४. आते ही सदा अतीन्द्रिय सुख में सुख रुप रहा.

- रखा में कोन सा प्रकार?

१. वरदानी की रेखा रही.

२. हिम्मत और हुल्लास की रेखा रही.

३. जन्मते ही सहयोग के आधार पर चलने की रेखा रही.

- वेला में कोन सा प्रकार?

१. सेकेण्ड में निश्चय बुद्धि रहे अर्थात नजर से निहाल.

२. सप्ताह कोर्स के बाद रहे अर्थात श्रेष्ठ बोल से निहाल.

३. संशय बुद्धि की युद्ध चलते-चलते निश्चय बुद्धि बने अर्थात सौदागर से सौदे के मुआफिक मूल्य को बार-बार जानने के बाद मरजीवा बने.

४. अभी भी पूरे निश्चय बुद्धि नहीं वा कहे युद्ध चल रही है अर्थात जरा सा प्राप्ति के, स्नेह के, सम्पर्क के, परिवर्तन के आधार पर अभी संशय अभी निश्चय बुद्धि बने.

बापदादा ने आगे कहा, जो हर कल्प की अति समीप आत्मायें वा पदमापदम भाग्यशाली आत्मायें है उनकी रुप, रेखा और वेला क्या होती है?

- रुप कैसा होगा?

जन्मते ही सर्व प्रोपर्टी के अधिकारी होते हैं, ऐसे हर स्वरूप के अनुभूति का अधिकार अनुभव करेंगे. जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार समाया हुआ है ऐसे नम्बर वन अर्थात बाप समान समीप आत्मायें वा नम्बर वन वेला वाली आत्मायें सर्व स्वरूप (आदि और अनादि स्वरूप) की प्राप्ति के खज़ाने के आते ही अनुभवी होंगे. ऐसे अनुभव करते है की यही स्वरूप हमारा निजी स्वरूप है.

- रेखा कैसी होगी?

जन्म से ही नेचरल निश्चय बुद्धि की वरदानी रेखा होंगी. निश्चय की रेखा की लाइन अखण्ड होगी. ऐसे पूरे जीवन के अटूट निश्चय की रेखा अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट दिखाई देगी. ऐसी रेखा वाले के मस्तक में अर्थात स्मृति में सदा विजय का तिलक नजर आयेगा. ऐसी रेखा वाले, जैसे ब्राह्मणों का भविष्य श्रीकृष्ण के रूप में जन्म से ही ताजधारी दिखाया है, ऐसे जन्म से ही सेवा की जिम्मेदारी के ताजधारी होंगे, सदा ज्ञान रत्नों से खेलने वाले होंगे. सदा याद और खुशी के झुले में झूलते हुए जीवन बिताने वाले होंगे. सदा हर कर्म में वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे. हर दिनचर्या में अपने साथ सर्व सम्बन्धों से समीप और साकार रूप में साथ का अनुभव करेंगे. स्वतः योगी और सहज योगी होंगे.

- वेला कैसी होगी?

सेकेण्ड में पहुँची और बाप की बनी. कल्प पहले के भाग्य के टचिंग के आधार पर जन्मते ही ऐसे अनुभव करेंगे "ब्राह्मण बनना है, नहीं लेकिन ब्राह्मण थे, पहले भी थे और अब भी है", सेकेण्ड में अपना पन अनुभव होगा. देखा और जाना.

यह है नम्बरवन रुप-रेखा और बेला वालों की निशानी. अब अपने आपको चेक करो.

बापदादा ने अन्त में कहा, ऐसे बाप के वरदानों के हाथ को अपने ऊपर अनुभव करने वाले, सदा अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहमदिल, अटूट-अखण्ड निश्चय बुद्धि, अखण्ड योगी, सदा विजय के तिलकधारी, जन्मते ही ताजधारी, ऐसे सदा तख्तनशीन बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 29-09-14

आज बाबा ने सब को बहुत सहज रुप से बाप का सत्य परिचय विश्व की सर्व आत्माओं को देने के लिए कहा हैं. वैसे किसी को भी बाप का परिचय हम दो-तीन लाइन में भी दे सकते हैं – किसको भी पुछेंगे "आप अपने को आत्मा (soul) समझते हो?" तो जरूर हाँ कहेंगे. फिर पुछो "आत्माओं का पिता कोन है?" जब कोई जवाब न मिले तो कहो – "परमपिता-परमात्मा". यह हो गया बाबा का परिचय. अगर सामने वाला भारतीय है तो एक और प्रश्न पुछ सकते है – "हमारे भारत में जितने भी देवी-देवता है उनमें से परमपिता-परमात्मा किसके लिए गाया जाता है?" – अच्छा भक्त होगा तो तुरंत कहेगा – "शिव". अगर सामने वाला ज्यादा जिज्ञासु है तो उसे बता सकते है कि अभी शिव परमपिता-परमात्मा का कार्य चल रहा हैं. ज्यादा जानकारी चाहें तो नजदीक के सेन्टर का पता दे सकते हैं.

किसको भी बाबा का ज्यादा परिचय हम दे सके इसलिए बाबा की बायोग्राफी लिखकर भेज रहे हैं.

बाबा ने हमें जो ज्ञान दिया हे उसके आधार से सत्य गीता ज्ञान दांता शिवबाबा की बायोग्राफी --

नाम – शिव. बाबा ने कहा हे, एक ही आत्मा का नाम शिव हैं, हम बच्चों की आत्मा का नाम नहीं हैं. हमारे शरीर का नाम होता हे.

स्वरूप - निराकार, ज्योति सितारा. बाबा ने कहा हे, विश्व की सर्व मनुष्य आत्माओं ओर बाप की आत्मा का स्वरूप समान हे. छोटा-बडा नहीं होता.

रहने का स्थान - परमधाम / शांतिधाम / निर्वाणधाम / मुलवतन / ब्रह्म-तत्व / ब्रह्मांड / इन-कोरपोरिअल वर्ल्ड.

काल (समय) - सृष्टि रूपी ड्रामा चक्र में उनका पार्ट कलियुग के अन्त में और सतयुग के शुरू होने से पहले, संगमयुग में खुलता हैं.

महिमा - ज्ञान का सागर, प्यार का सागर, शांति का सागर, सुख कर्ता - दुख हर्ता, विश्व कल्याणकारी, मुक्ति-जीवनमुक्ति दांता, सर्वशक्तिमान, भोलानाथ, बबूलनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, महाकाल, त्रिकालदर्शी, पतित-पावन, अंतरयामि, विधाता, रामेश्वरम, गोपेश्वर, ईश्वर, सत्य (ट्रुथ), भगवान, सतगुरु, रचेता, जादूगर.

ड्रामा में पार्ट - बाप, टीचर, और सतगुरु.

विशेषताये - बाबा की अनेक में से कुछ विशेषताये यहाँ बताई हुई हैं.

बाबा ने कहा है, जब तक वह स्वयं आकर खुद का परिचय ना दे तब तक उसे कोई जान नहीं सकता हैं.
बाबा हम सब जीवात्माओं का पिता हैं. हम आत्मा हैं, वह परमपिता-परमात्मा हैं.
बाबा ही सत्य गीता ज्ञान दांता है.
बाबा माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते. बल्कि डायरेक्ट ब्रह्मा के तन में आकर हम बच्चों को ज्ञान देते है.
बाबा सदा पावन हैं. जब की हम जिवात्माये पावन से पतित बनती हे ओर बाबा हमें फिरसे पावन बनाते है.

बाबा हम सब जीवात्माओं को बच्चे-बच्चे ही कहेंगे क्योंकि वह सबसे ऊँचे ते ऊँच हैं. बाबा के ऊपर कोई नहीं. ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी उनके बच्चे हैं.

बाबा पतित-पावन हैं. क्योंकि हम आत्माओं को पतित से पावन बनाते हैं.

बाबा ज्ञान का सागर हैं. क्योंकि बाबा को ही सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हैं.

बाबा कलियुग के अन्त में आकर हम बच्चों को आत्मा, परमात्मा ओर ड्रामा का सत्य ज्ञान देते हैं. हमें पावन बनने का और कर्म-बन्धनों से मुक्त होने का रास्ता बताते हैं.

बाबा हम भाग्यशाली बच्चों के बाप बनकर पालना करते हैं, टीचर बनकर ज्ञान देते हैं और सतगुरु बनकर हमें साथ ले जाते हैं.

बाबा सर्वशक्तिमान हैं. क्योंकि वही विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति ओर हम बच्चों को जीवन-मुक्ति देते हैं.

बाबा अभोक्ता हैं. क्योंकि बाबा को शरीर ही नहीं हैं.

बाबा न्यारा-प्यारा और साक्षी हैं.

बाबा सबकुछ हम बच्चों को दे देते हैं. फकत दिव्य-दृष्टि की चाबी अपने पास ही रखते हैं जिससे वह भक्तों को साक्षात्कार कराते हैं.

बाबा ही भक्तिमार्ग में भक्तों को साक्षात्कार भी कराते हैं.

बाबा ही ड्रामा में हीरो पार्टधारी हैं. ड्रामा के अन्त में आकर सभी जीवात्माओं को दुखो से मुक्त करते हैं.

बाबा को रचयिता भी कहते हैं. क्योंकि वही नई सतयुगी दुनिया की स्थापना करते हैं.

बाबा को महाकाल भी कहते हैं. क्योंकि वह हे कालों का काल.

बाबा को भोलानाथ भी कहते हैं. क्योंकि वह आत्माओं से पुराने विकारों को लेकर, आत्माओं को दिव्य-गुणों ओर शक्तिओ से भर देते हैं.

बाबा को विश्वनाथ भी कहते हैं. क्योंकि समग्र विश्व का नाथ हैं.

बाबा को सोमनाथ भी कहते हैं. क्योंकि बाबा ही हम बच्चों को ज्ञान का सोमरस पिलाते हैं.

बाबा को बबूलनाथ भी कहते हैं. क्योंकि हमारे में से कांटों जैसे विकारों को निकाल कर, हमें फूल जैसा बनाते हैं.

बाबा को त्रिकालदर्शी भी कहते हैं. क्योंकि बाबा को ही कल्प के आदि-मध्य-अन्त का सम्पूर्ण ज्ञान हैं और हम बच्चों को भी देते हैं.

बाबा को विश्व-कल्याणकारी भी कहते हैं. क्योंकि बाबा ही विश्व की सर्व आत्माओं को विकारों से मुक्त कर मुक्तिधाम ले जाते हैं.

बाबा को जादूगर भी कहते हैं. क्योंकि बाबा ही सम्पूर्ण विकारी दुनिया को सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते हैं.

बाबा ने आकर हमें सर्व शास्त्रों, धर्मग्रंथों, वेदों, उपनिषदों का सार समझाया हैं.

बाबा ने आकर हमें भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग का सही भेद समझाया हैं.

बाबा ने हमें सर्व दैवी-देवताओं का राज (razz) भी बताया हैं.

बाबा कहते है सर्व ज्ञान का सार है, दो शब्द. "अल्फ और बे" या "बाप और वर्सा" या "मनमनाभव और मध्याजीभव".

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-09-14

हमें सतयुग आदि और कलियुग अन्त का कोन्टरास्ट बताकर, मनुष्य से देवी-देवता बनने का उमंग-उत्साह देने बाले, बेहद के टीचर - शिवबाबा ने कहा, "मीठे बच्चे - तुम बेहद के बाप के पास आये हो विकारी से निर्विकारी बनने, इसलिए तुम्हारे में कोई भी भूत नहीं होना चाहिए."

यह तो हम सब जानते है की बाबा हमें क्या पढ़ा रहे हैं? बाबा अभी हम आत्माओं को स्वराज्य अधिकारी बनने की पढ़ाई पढ़ा रहे है जिसे हम आत्माये राजा बन जायेंगी. किसकी? अपनी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों की. अगर हम आत्माये अभी स्वराज्य अधिकारी बनी तो भविष्य स्वर्ग में भी राजा बनेंगी.

हमारी आत्मा स्वराज्य अधिकारी बने इसके लिए हमें प्रैक्टिस करनी हैं - आत्म-अभिमानी बनने की. और फिर सतयुग में देवी-देवता पद प्राप्ति के लिए दैवी-गुण भी धारण करने हैं, मुख्य दैवी-गुण हैं - पवित्रता, संतुष्टता, धैर्यता और रमणीकता.

आत्म-अभिमानी बनने की और दैवी-गुणों को धारण करने की यह पढ़ाई हम उमंग-उत्साह में रहकर पढ़े इसके लिए बाबा ने आज सारी मुरली में कलियुग के अन्त (अभी की दुनिया) और सतयुग आदि (आने वाली दुनिया) का अन्तर बताया हैं. जिसे हम समझ सके की आनेवाली सतयुगी दुनिया में कितना सुख हैं और उसमें जाने के लिए हम प्रोत्साहित होकर ईश्वरीय पढ़ाई को पढ़े.

- यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया अथवा विकारी दुनिया. वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया अथवा कहे निर्विकारी दुनिया.

- अभी है पुरानी दुनिया, पुराना भारत. जब भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब उसे नई दुनिया, नया भारत कहा जाता था.

- यह रावण हैं भारत का आधाकल्प का दुश्मन, जब मनुष्य में पांच विकार (भूत) प्रवेश करते हैं. इन देवताओं में यह भूत नहीं थे.

- द्वापर-कलियुग को कहा जाता है रावण राज्य. सतयुग-त्रेता को कहा जाता है राम-राज्य.

- यह है अपार दुखो की दुनिया, वह है अपार सुखों की दुनिया.

- कलियुग है दुखधाम, सतयुग है सुखधाम.

- विकार में जाना माना एक-दो पर काम-कटारी चलाना, यह है रावण की रचना. सतयुग है भगवान की रचना, वहाँ काम-कटारी होती ही नहीं.

- यह है रावण का दुख का वर्सा, वहाँ है भगवान का सुख का वर्सा.

- अभी है भारत १०० प्रतिशत इनसोलवन्ट, फिर सतयुग में होगा १०० प्रतिशत सोलवन्ट - यह खेल बना हुआ हैं.

- अभी साईन्स घमंडीओं से माया का कितना पॉम्प हैं. तो इसे कहा जाता है रावण का स्वर्ग. भगवान के स्वर्ग को कहाँ जाता है सतयुग, जहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा.

- अभी रावण राज्य में सब हैं झूठ बोलने वाले. गॉड़ फादर ही सचखंड की स्थापना करते हैं. वहाँ झूठ की बात ही नहीं होती.

- अभी है आसुरी राज्य, सतयुग-त्रेता में है ईश्वरीय राज्य. जो अब स्थापन हो रहा हैं.

- यहाँ सब है नर्कवासी पतित, फिर सतयुग में होंगे सब पावन.

- यहाँ भल धन है परन्तु बीमारियां आदि भी हैं. वह हैप्पीनेस रह न सके. कुछ न कुछ दुख रहता है. वहाँ तुम्हें हेल्थ, वैल्थ, हैप्पीनेस सबकुछ मिल जाता हैं. उनका नाम ही है सुखधाम, स्वर्ग, पैरेडाइज.

ॐ शांति.